mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-135 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

18 मई 2025 रविवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

'गोल्डन बॉय' नीरज...
@ पेज 7

ज्योति मल्होत्रा पर पाकिस्तान को गोपनीय जानकारी भेजने का आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक तरफ जहां पाकिस्तान पर वॉटर स्ट्राइक हो रहा है। वहीं, भारत में घूम रहे पाकिस्तानी जासूसों पर भी एक्शन जारी है। पिछले सात दिनों में पाकिस्तान के लिए जासूसी के आरोप में 6 लोग पकड़े जा चुके हैं। इनमें सबसे चौंकाने

● एहसान-उर-रहीम उर्फ दानिश के संपर्क में आई ज्योति

वाला नाम हरियाणा की यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा का है। ज्योति पर पाकिस्तान के लिए जासूसी करने का आरोप है। ज्योति पाकिस्तान क्यों गई थी? पाकिस्तान हाईकमिशन से ज्योति का क्या संबंध है? पाकिस्तान में ज्योति किससे बात करती थी? यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा आखिरकार कैसे पकड़ी गई? आखिर कौन है ये ज्योति मल्होत्रा? पूरी डिटेल इस रिपोर्ट में पढ़िए...

हरियाणा की हिसार पुलिस ने पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में ज्योति मल्होत्रा नाम की एक महिला यूट्यूबर को गिरफ्तार किया है। ज्योति पर पाकिस्तान को भारत की गोपनीय सैन्य जानकारियां भेजने का आरोप है। ज्योति मल्होत्रा ट्रैवल विद जो नाम से यूट्यूब चैनल चलाती है। ज्योति दो बार पाकिस्तान भी हो आई है।

ज्योति ने पाकिस्तान हाई कमीशन के अंदर का वीडियो बनाया है। इस वीडियो में ज्योति के साथ जो शख्स दिख रहा है। ये एहसान-उर-रहीम उर्फ दानिश है। ये पाकिस्तान हाईकमिशन में काम करने वाला वही दानिश है, जिसे भारत सरकार ने 13 मई को पर्सोना नॉन ग्राटा डेक्लेयर करते हुए देश छोड़ने का आदेश दे दिया था।

कौन है ये ज्योति मल्होत्रा? ज्योति दानिश के संपर्क में कैसे आई? पाकिस्तान के लिए जासूसी की पूरी कहानी क्या है? ये जानने से पहले ज्योति की प्रोफाइल समझ लीजिए। हरियाणा के हिसार में रहने वाली ज्योति मल्होत्रा व्लॉगर है। ज्योति यूट्यूब पर ट्रैवल विद जो नाम से चैनल चलाती है। यू ट्यूब पर ज्योति के चैनल के 3 लाख 77 हजार सब्सक्राइबर हैं। इंस्टाग्राम में ज्योति के 1 लाख 32 हजार सब्सक्राइबर हैं। फेसबुक में ज्योति के 3 लाख 21 हजार फॉलोअर्स हैं। ज्योति सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव है। व्लॉगिंग के लिए अलग-अलग देशों में जाती है। ज्योति दो बार पाकिस्तान गई है। बांग्लादेश इंडोनेशिया सहित कई देशों की यात्रा कर चुकी है। लेकिन असली कहानी ज्योति की पाकिस्तान यात्रा से शुरु होती है।अपने ट्रैवल चैनल ट्रैवल विद जो के शूट के सिलसिले में ज्योति पहली बार 2023 में पाकिस्तान गई थी।

पाकिस्तान जाने के लिए वीजा के सिलसिले में ज्योति का भारत स्थित पाकिस्तान हाईकमीशन जाना हुआ था। पाकिस्तान हाईकमीशन में ज्योति की मुलाकात पाकिस्तान हाई कमीशन के कर्मचारी एहसान-उर-रहीम उर्फ दानिश से हुई। यहीं से दानिश और ज्योति की दोस्ती परवान चढ़ने लगी।

बताया जाता है दोनों में काफी क्लोज रिलेशन बन गए थे। दानिश ने ज्योति का वीजा दिलाकर पाकिस्तान भेजा। दानिश के माध्यम से ज्योति की पहचान पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी के अन्य एजेंटों से कराई गई, जिनमें अली अहसान और शाकिर उर्फ राणा शहबाज शामिल है।

संक्षिप्त समाचार

भारत के मिसाइल अटैक में ध्वस्त हुए जमात-उद-दावा के मुख्यालय का पुनर्निर्माण कराएगी पाक सरकार

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले का बदला लेने के लिए भारत ने पाकिस्तान के कई आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया। इसमें मुरीदके में स्थित जमात-उद-दावा का मुख्यालय भी शामिल था। पाकिस्तान सरकार ने भारत के मिसाइल हमले में नष्ट हुए जमात-उद-दावा के मुख्यालय मुरीदके स्थित मस्जिद का पुनर्निर्माण कराने का आश्वासन दिया है। पाकिस्तान मरकजी मुस्लिम लीग ने शनिवार को यह जानकारी दी। पाकिस्तान मरकजी मुस्लिम लीग प्रतिबंधित जमात-उद-दावा की एक राजनीतिक शाखा है। लश्कर-ए-तैयबा का मुखौटा संगठन है। एलईटी ने भारत के कई हिस्सों में आतंकवादी हमले किए हैं, जिनमें 2008 में हुआ

पहलगाम में आतंकी हमले के बाद 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारतीय सेना ने 6 मई की देर रात पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में 9 आतंकी ठिकानों पर मिसाइल हमले किए, जिनमें बहावलपुर में जैश-ए-मोहम्मद का गढ़ और मुरीदके में लश्कर का ठिकाना भी शामिल था। पाकिस्तान का दावा है कि लाहौर से करीब 40 किलोमीटर दूर स्थित मुरीदके में हुए हमलों में एक मस्जिद और एक शैक्षणिक परिसर को निशाना बनाया गया। हमलों में छह के तीन आतंकी मारे गए। जब पाकिस्तानी सेना, पुलिस और नागरिक प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी उनके अंतिम संस्कार में शामिल हुए तो विवाद खड़ा हो गया।

सिंगापुर में भारतीय पर्यटक ने 12 वर्षीय बच्ची के साथ की गंदी हरकत, भेजा गया जेल

सिंगापुर (एजेंसी)। सिंगापुर में एक भारतीय पर्यटक को 12 वर्षीय बच्ची के साथ गंदी हरकत करने के आरोप में जेल भेज दिया गया है। आरोप है कि पर्यटक ने न सिर्फ बच्ची से छेड़छाड़ की, बल्कि उसे सोशल मीडिया मंच 'इंस्टाग्राम' पर आपत्तिजनक संदेश भी भेजे। इसके चलते आरोपी को तीन महीने कैद की सजा सुनाई गई है। इसके बाद उसे जेल भेज दिया गया। चैनल न्यूज एशिया (सीएनए) की खबर के अनुसार, 25 वर्षीय प्रमेंदर ने शुक्रवार को 14 वर्ष से कम

उम्र की बच्ची से अश्लील कृत्य के प्रयास करने और उसके साथ छेड़छाड़ करने के आरोप को स्वीकार कर लिया है। सीएनए की खबर के अनुसार, प्रमेंदर पर आरोप है कि उसने 31 मार्च को पीड़िता का जालान बेसर स्विमिंग कॉम्प्लेक्स के शौचालय तक पीछा किया। जालान बेसर स्विमिंग कॉम्प्लेक्स में बच्ची अपने परिवार को साथ आई थी। खबर के अनुसार, प्रमेंदर ने बच्ची का फोन लिया और उसका इंस्टाग्राम अकाउंट खोला, फिर उसने अपने अकाउंट को उस बच्ची के अकाउंट से फॉलो किया। इसके बाद, उसने इंस्टाग्राम पर लड़की को 13 आपत्तिजनक संदेश भेजे। जब बच्ची ने ये संदेश देखे, तो वह डर गई और ड्यूटी पर तैनात सुरक्षाकर्मी को इस घटना की जानकारी दी। पीड़िता की मां ने बाद में पुलिस में शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद दो अप्रैल को आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया।

दिल्ली में खराब मौसम का उड़ानों पर पड़ा असर, 49 फ्लाइट्स में देरी, 11 कैंसिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली-एनसीआर में खराब मौसम का असर उड़ानों पर भी पड़ा। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) एयरपोर्ट पर कुल 49 उड़ानों में देरी हुई। इनमें 16 अंतरराष्ट्रीय और 33 घरेलू उड़ानें शामिल हैं। इसके साथ ही 11 उड़ानों को कैंसिल भी करना पड़ा। श्रीनगर की तीन, देहरादून की दो और भटिंडा, अहमदाबाद, कोलकाता व मुंबई की एक-एक उड़ान कैंसिल की गई। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) एयरपोर्ट पर यहां से प्रस्थान होनेवाली उड़ानों में ही देरी हुई जबकि यहां आनेवाली सभी उड़ानों का आगमन सुचारू रूप से हुआ। 16 अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में देरी हुई। घरेलू उड़ानों की बात करें तो कुल 33 उड़ानों के रवाना होने में देरी हुई। उड़ानों में देरी के चलते यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। वहीं दिल्ली आनेवाले यात्रियों को किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। सभी फ्लाइट्स समय पर लैंड हुईं। दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कई हिस्सों में शनिवार दोपहर तेज आंधी चली और हल्की बारिश हुई। दोपहर तीन बजे तक दिल्ली में लगभग एक मिमी बारिश दर्ज की गई। मध्य दिल्ली, महारानी बाग, मयूर विहार, गाजियाबाद और नोएडा में भी हल्की बारिश हुई। हालांकि हवा की गति काफी तेज रही। आईएमडी ने बताया कि न्यूनतम तापमान 24.3 डिग्री सेल्सियस रहा, जो मौसम के औसत से 2.2 डिग्री कम है।

गांधीनगर में गरजे गृहमंत्री अमित शाह-

तीनों सेनाओं ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया, परमाणु बम की धमकी ...

गांधीनगर (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गांधीनगर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले का बदला ले लिया गया है। तीनों सेनाओं ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया। साथ ही उन्होंने कहा कि हम परमाणु बम की धमकी से नहीं डरते हैं।

अमित शाह ने कहा, पाकिस्तान से आतंकवादी आते थे और हमारी जनता, सेना को मारकर चले जाते थे। हम कुछ नहीं कर पाते थे। नरेंद्र मोदी जी ने जब से पीएम की शपथ ली तब से तीन बड़े हमले हुए। पहला उरी में हुआ, दूसरा पुलवामा में और तीसरा पहलगाम में हुआ. मोदी जी ने हर हमले का जवाब इतनी ताकत से दिया कि आज पूरी दुनिया आश्चर्यचकित होकर देख रही है और आज पाकिस्तान भयभीत है।

गृह मंत्री शाह ने कहा, उरी हमले के बाद सर्जिकल स्ट्राइक करके प्रतिकात्मक जवाब दिया गया। चेतावनी दी गई। पुलवामा में हमला हुआ तो एयरस्ट्राइक करके चेतावनी दी। लेकिन ये सुधरे नहीं, पहलगाम हमला हुआ तो ऑपरेशन सिंदूर से उनके आतंक के हेडक्वार्टर को नेस्तनाबूत कर दिया गया। दुनियाभर के डिफेंस एक्सपर्ट ऑपरेशन सिंदूर का जब एनालिसिस करने लगते हैं तो आश्चर्यचकित हो जाते हैं। पहलगाम हमले का बदला लश्कर और जैश के हेडक्वार्टर को मिट्टी में मिलाकर लिया गया। गृह मंत्री शाह ने आगे कहा, भारत ने जवाब दिया तो भारत के संस्कार के हिसाब से दिया। लश्कर और जैश के हेडक्वार्टर उड़ा दिए। आतंकियों के कुल 9 ठिकानों को भारत की वीर सेना ने मिट्टी में मिला दिया। पाकिस्तान की सीमा में 100 किमी अंदर जाकर आतंकियों को जवाब देने का काम किया है। कई अंतरराष्ट्रीय आतंकी घटनाओं के सरगनाओं को यह साफ संदेश दिया है कि भारत की जनता के साथ अगर आतंकी घटना की गई तो उसका जवाब दोगुने जोश के साथ दिया जाएगा।

10वीं क्लास में 73 प्रतिशत नंबर आने के बाद छात्रा ने की सुसाइड

नांदेड़ (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नांदेड़ में दो दिनों में दो छात्रों ने खुदकुशी की है। इन घटनाओं से इलाके में हड़कंप है। दरअसल 10वीं कक्षा में 73त्न अंक लाने के बावजूद एक छात्रा ने खुदकुशी कर ली। वहीं दूसरी ओर शिक्षक द्वारा मानसिक प्रताड़ना के कारण नर्सिंग कॉलेज के तीसरे साल के एक छात्र ने भी जान दे दी। मृतक छात्र की मां और बहन ने इस मामले में गंभीर आरोप लगाए हैं।

अंबानगर निवासी एक छात्रा रोशनी पगारे ने 10वीं कक्षा में कम अंक आने से निराश होकर अपने घर पर पंखे से रस्सी बांधकर खुदकुशी कर ली। यह मामला बुधवार के शाम चार बजे के दौरान सामने आया। घटना 14 मई को दोपहर करीब साढ़े तीन बजे सांगवी इलाके के अंबानगर में घटी। मृतक लड़की का नाम रोशनी पगारे है। रोशनी ने 10वीं कक्षा में 73 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। वह 80 से 85त्न अंक न मिलने के कारण हताश थी। रोशनी पगारे सावित्रीबाई फुले स्कूल में थी। वह स्कूल में एक होशियार लड़की के रूप में जानी जाती थी।

दूसरे दिन गुरुवार को नांदेड़ में एक घटना सामने आई जहां एक नर्सिंग छात्र ने अपने कॉलेज के शिक्षकों द्वारा परेशान किए जाने के बाद गोदावरी नदी में कूदकर खुदकुशी कर ली।

केवड़ा फूल तोड़ने को लेकर दो गुटों में हिंसक झड़प

चाकू, हंसिया और लाठी-डंडों से मारपीट, 20 से ज्यादा घायल

गांजाम (एजेंसी)। ओडिशा के गांजाम जिले के सिंदुरापल्ली गांव में शनिवार को केवड़ा फूल तोड़ने के विवाद को लेकर दो गुटों के बीच जबरदस्त झड़प हो गई। यह झगड़ा इतना हिंसक हो गया कि इसमें 20 से ज्यादा लोग घायल हो गए, जिनमें से कम से कम तीन की हालत गंभीर बताई जा रही है। घटना चमाखंडी थाना क्षेत्र के अंतर्गत इलाके में हुई है। जानकारी के अनुसार, यह विवाद केवड़ा फूल इकट्ठा करने को लेकर शुरू हुआ। दोनों गुटों के लोग पहले बहस में उलझे फिर बात हाथापाई तक पहुंच गई और उसके बाद मामला पूरी तरह हिंसा में बदल गया।

करीब 30 मिनट तक चले इस टकराव में दोनों पक्षों के लोग चाकू, हंसिया, धारदार हथियार और लाठी डंडों से एक दूसरे पर टूट पड़े। झड़प की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे हैं, जिससे यह मामला और भी चर्चित हो गया है।

घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। जहां उनका इलाज चल रहा है। गंभीर रूप से घायल तीन लोगों को विशेष निगरानी में रखा गया है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और हालात को काबू में करने के लिए कार्रवाई शुरू की।

पुलिस द्वारा इलाके में शांति बहाल करने के प्रयास किए जा रहे हैं। मामले की जांच जारी है। पुलिस अधिकारी घटनास्थल पर मौजूद हैं और दोनों पक्षों से पूछताछ कर रहे हैं।

दरअसल, केवड़ा फूल की मांग और कीमत बढ़ने की वजह से अक्सर गांवों में इसे लेकर विवाद होते रहते हैं। लेकिन इस बार मामला काफी बड़ा हो गया और खुला संघर्ष हो गया। पुलिस जल्द ही दोषियों को चिन्हित कर कड़ी कार्रवाई करने की तैयारी कर रही है। साथ ही भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए इलाके में पुलिस गश्त भी बढ़ाई जाने के विषय में भी चर्चा की जा रही है ।

मानवता के लिए खतरा बन गया है पाकिस्तान

दुश्मन देश पर एक बार फिर भड़के असदुद्दीन ओवैसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन नेता असदुद्दीन ओवैसी ने शनिवार को कहा कि पाकिस्तान का आतंकवाद को प्रायोजित करने का लंबा इतिहास है। यह देश मानवता के लिए खतरा बन गया है। ओवैसी ने कहा कि सरकार द्वारा कई देशों के दौरे पर भेजे जा रहे सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडलों में से एक के सदस्य के तौर पर यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए उनके संदेश का मूल मंत्र होगा।

हैदराबाद के सांसद ओवैसी ने पीटीआई के साथ एक साक्षात्कार में कहा कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों द्वारा लंबे समय से निर्दोष नागरिकों की हत्या के बारे में दुनिया को बताना होगा। उन्होंने कहा, 'भारत ने पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का काफी दंश झेला है। हम सभी ने जिया-उल-हक के समय से लोगों का कत्लेआम देखा है।' हालांकि, ओवैसी ने कहा कि सरकार ने अभी तक उन्हें कूटनीतिक मुहिम के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं दी है। लोकसभा सदस्य ओवैसी ने कहा कि भारत के साथ टकराव में पाकिस्तान द्वारा खुद को इस्लामी देश के रूप में पेश करने पर उसे आड़े हाथों लेना जरूरी है।

उन्होंने कहा, 'यह बकवास है। भारत में करीब 20 करोड़ मुसलमान रहते हैं। यह भी बताना जरूरी है।' ओवैसी ने कहा कि भारत को अस्थिर करना, सांप्रदायिक विभाजन को उकसाना और देश के आर्थिक उत्थान को रोकना पाकिस्तान की अलिखित विचारधारा का हिस्सा है।

उन्होंने कहा कि यह हमेशा से पाकिस्तानी 'डीप स्टेट' और उसकी सेना का मकसद रहा है। उन्होंने कहा कि भारत को पाकिस्तान की चाल बहुत पहले ही समझ लेनी चाहिए थी, जब उसने 1947 में अपनी आजादी के बाद जम्मू कश्मीर में कबायली घुसपैठियों को भेजा था। उन्होंने कहा, 'वे यह तमाशा तब से कर रहे हैं। वे कल भी ऐसा करते रहेंगे और रुकने वाले नहीं हैं। हालांकि, पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत का धैर्य जवाब दे गया।' उन्होंने कहा कि आतंकवादियों को हथियार, प्रशिक्षण और वित्तीय मदद देकर पाकिस्तान मानवता के लिए खतरा बन गया है।

दुल्हन को मंगलसूत्र पहनाते ही दूल्हे की हुई मौत

मंडप से उठी अर्थी, सुहागन बनने से पहले विधवा हुई दुल्हन

जामखंडी (एजेंसी)। कर्नाटक के बागलकोट के शादी के दौरान ही दूल्हे को हार्ट अटैक आ गया, जिससे उसकी मौत हो गई। बताया जा रहा है कि मंगलसूत्र पहनाते ही दूल्हे को हार्ट अटैक आ गया। दुल्हे की उम्र महज 25 साल थी। इस घटना से दूल्हे और दूल्हन के परिवार के लोग सदमे में हैं। हालांकि, यह किसी युवा को हार्ट अटैक आने का पहला मामला नहीं है। पिछले कुछ साल में युवाओं में हार्ट अटैक के मामले तेजी से बढ़े हैं।

अहम मौकों पर हार्ट अटैक की कई घटनाएं सामने आई हैं। गायक केके की मौत भी एक कॉन्सर्ट के दौरान दिल का दौरा पड़ने से हुई थी। इसके अलावा जिम में हार्ट अटैक के मामले बढ़े हैं। डांस करते हुए भी हार्ट अटैक की कई घटनाएं सामने आई हैं।

यह घटना शनिवार को जामखंडी कस्बे में हुई। यहां शादी समारोह चल रहा था, तभी यह हादसा हुआ। शादी समारोह में मौजूद एक व्यक्ति ने बताया कि मंगलसूत्र बांधने के कुछ ही मिनट बाद दूल्हे प्रवीण को सीने में दर्द हुआ और वह जमीन पर गिर पड़ा। एक अन्य व्यक्ति ने बताया कि माता-पिता दूल्हे को एक निजी अस्पताल ले गए। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

यह घटना युवाओं में दिल के दौरे की बढ़ती घटनाओं एक और उदाहरण है। यह घटना सभी की चिंता बढ़ाने वाली है। फरवरी में मध्य प्रदेश में एक शादी के दौरान संगीत समारोह में डांस करते देते समय 23 वर्षीय युवती को दिल का दौरा पड़ा था और मंच पर ही उसकी मौत हो गई थी। पिछले साल दिसंबर में, उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में अपने स्कूल में खेल प्रतियोगिता के लिए दौड़ने का अभ्यास करते समय एक 14 वर्षीय लड़के की दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई।

दांत दर्द की गोली मांगने पर मेडिकल स्टोर वाले ने दी सल्फास की गोली, खाकर महिला की हुई मौत

झाबुआ (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के झाबुआ से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक महिला ने मेडिकल स्टोर पर जाकर दांत दर्द की गोली मांगी थी लेकिन दुकानदार ने उसे सल्फास की गोली दे दी। महिला ने उसे दांत दर्द की दवाई समझकर खा लिया और उसकी मौत हो गई। ये मामला सामने आने के बाद हड़कंप मच गया और मेडिकल स्टोर पर दवाई बेचने वाले शख्स को गिरफ्तार करने की कोशिश की जा रही है। झाबुआ के पुलिस अधीक्षक पदम विलोचन शुक्ल ने बताया, %पुलिस ने दुकान मालिक को भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 105 (गैर इरादतन हत्या) के तहत गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि जिला मुख्यालय से करीब तीन किलोमीटर दूर धरमपुरी गांव की निवासी रेखा बृहस्पतिवार शाम को थांदला गेट के पास एक मेडिकल स्टोर गई थी और दांत दर्द से राहत के लिए दवा मांगी थी। दुकान के विक्रेता ने उसे सल्फास की गोली दी, जिसे उसने उसी रात घर पर खा लिया और उसकी तबीयत बिगड़ गई। उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां उसकी मौत हो गई।पुलिस अधीक्षक ने बताया, %परिवार ने शुक्रवार को पुलिस को सूचना दी और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। प्रारंभिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सल्फास के कारण मौत की पुष्टि हुई है, जिसके बाद मामला दर्ज किया गया और दुकान के मालिक लोकेंद्र बाबेल (52) को गिरफ्तार कर लिया गया।

बारिश में करंट से बचने के लिये एडवायजरी जारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मॉनसूनी मौसम के दौरान हवा में नमी के कारण करंट लगने की आशंका ज्यादा रहती है। करंट से लोगों की मौत हो जाती है। लेकिन ज्यादातर मौतों को टाला जा सकता है। ज्यादातर मौतें घरों में अर्थिंग नहीं होने या कमजोर अर्थिंग की वजह से होती है। अर्थिंग या तो स्थानीय स्त्रोत से प्राप्त की जा सकती है या घर पर ही गहरा गढ़डा खोदकर खुद बनाई जा सकती है। बारिश में बिजली से होने वाली दुर्घटनाओं से बचने के लिए विद्युत विभाग द्वारा एडवायजरी जारी की गयी है। जारी एडवायजरी में घर में अर्थिंग की उचित व्यवस्था रखें। हरे रंग के तार को हमेशा याद रखें, इसके बिना कभी बिजली उपकरण का प्रयोग न करें, खास कर जब यह पानी के स्त्रोत को छू रहा हो। पानी करंट के प्रवाह की गति को बढ़ा देता है, इसलिए नमी वाले माहौल में अतिरिक्त सावधानी रखें। दो पिन वाले बिना अर्थिंग के उपकरणों का प्रयोग न करें। तीन पिन वाले प्लग का प्रयोग करते समय ध्यान रखें कि तीनों तार जुड़े हों और पिनें खराब न हों। तारों को सॉकेट में लगाने के लिए माचिस की तीलियों का प्रयोग न करें। किसी भी तार को तब तक न छुएं, जब तक बिजली बंद न कर दी गई हो। अर्थिंग के तार को न्यूट्रल के विकल्प के तौर पर प्रयोग न करें। सभी जोड़ों पर बिजली वाली टेप लगाएं, न कि सेलोटेप या बेंडेड। गीज़र के पानी का प्रयोग करने से पहले गीज़र बंद कर दें। हीटर प्लेट का प्रयोग नंगी तार के साथ न करें। घर पर सूखी रबड़ की चप्पलें पहनें। घर पर मिनी सर्किट ब्रेकर और अर्थ लीक सर्किट ब्रेकर का प्रयोग करें। मेटलिक बिजली उपकरण पानी के नल के पास न रखें। रबड़ के मैट और रबड़ की टांगों वाले कूलर स्टैंड बिजली उपकरणें को सुरक्षित बना सकते हैं। केवल सुरक्षित तारें और फ्यूज का ही प्रयोग करें। अर्थिंग की जांच हर छह महीने में करते रहें। किसी भी आम टैस्टर से करंट के लीक होने का पता लगाया जा सकता है। फ्रिज के हैंडल पर कपड़ा बांध कर रखें। प्रत्येक बिजली उपकरण के साथ बताए गए निर्देश पढ़ें।

अवैध रेत उत्खनन करने वालों पर तुरंत कर्रवाई करें : मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री एवं नरसिंहपुर जिला प्रभारी मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने जिला खनिज अधिकारी को निर्देश दिए कि जिले में अवैध रेत उत्खनन, परिवहन व भंडारण करने वालों पर तत्काल एक्शन लें। खनिज, पुलिस और राजस्व विभाग का अमला संयुक्त रूप से कार्रवाई करे। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने नरसिंहपुर में जिला योजना समिति की बैठक में यह निर्देश दिए।

श्री राजपूत ने आम जनता से जुड़ी समस्याओं का त्वरित निराकरण करने के निर्देश अधिकारियों को दिये। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधियों को जिले में हो रहे कार्यों से अवगत कराया जाये।

खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत माह अप्रैल में खाद्यान्न वितरण की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि जिले में हुए गेहूं उपार्जन का भुगतान शत प्रतिशत पूरा करें।

मंत्री श्री राजपूत ने लगातार नरसिंहपुर जिला प्रदेश में तीसरी बार प्रथम आने पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि मेरिट में आने वाले विद्यार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित किया जाये। इसके अलावा नवीन व्यावसायिक शिक्षा में अधिक से अधिक पंजीयन करायें, जिसमें युवाओं की मांग व उनके रूझान के अनुरूप प्रशिक्षण करवायें। इससे उन्हें रोजगार से जोड़ा जा सके। इसके लिए प्रशिक्षण के कोर्स भी बढ़ायें जायें। महिलाओं को सेंट आरसेटी में कौशल उन्नयन एवं रोजगार के लिए प्रशिक्षण दिया जाये, जिससे महिलाओं को एनआरएलएम से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि निर्माण एजेंसी सीएम राइज स्कूलों के निर्माण कार्य में तेजी लायें और पूरी गुणवत्ता के साथ कार्य पूरा करें।

मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि जिले में नरवाई नहीं जलाने के लिए संगोष्ठी, चौपाल आदि के माध्यम से किसानों को प्रेरित कर उन्हें नरवाई जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बतायें। प्रभारी मंत्री श्री राजपूत ने जिले में चलाये जा रहे जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चला रही है। अभियान में सभी की सहभागिता सुनिश्चित की जाये। योजना समिति की बैठक में लिये गये निर्णयों को शीघ्र अमल में लाने के निर्देश भी अधिकारियों को दिये।

बैठक में सांसद द्वय फग्गन सिंह कुलस्ते एवं चौ. दर्शन सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती ज्योति नीलेश काकोड़िया, विधायक द्वय विश्वनाथ सिंह पटेल एवं महेन्द्र नागेश, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती अनीता ठाकुर एवं विभागीय अधिकारी मौजूद थे

केन्द्रीय भू-जल बोर्ड की टीम ने किया सर्वे, रिपोर्ट के आधार पर बनाए जाएंगे जल स्रोतों के रिचार्ज

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केन्द्रीय भू-जल बोर्ड के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री राकेश सिंह के नेतृत्व में भू-जल विशेषज्ञों की टीम ने विदिशा जिले के जल स्त्रोतों का सर्वे किया है। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत इस तरह के सर्वे प्रदेश भर में कराए जाएंगे। इनकी सर्वे रिपोर्ट के आधार पर जल स्त्रोतों के रिचार्ज के लिए संरचनाएं बनाई जाएंगी। इस कार्रवाई को मानसून के सक्रिय होने से पूर्व पूरा कर लिया जाएगा।

जल गंगा अभियान के अंतर्गत प्रदेश की एकल नल जल योजनाओं के स्त्रोतों के स्थायित्व और निरंतरता के लिए रिचार्ज संरचनाओं का निर्माण किया जाना है। गांवों में रिचार्ज संरचनाओं के लिए स्थल चयन की सरल और सहज विधि आवश्यक है। इसके लिए प्रथम चरण में विदिशा जिले के तीन गांवों का चयन किया गया है। इनमें विदिशा विकासखंड का लालाखेड़ी, ग्यारसपुर विकासखंड के सिमरहार और मूडरा गणेशपुर शामिल हैं। सर्वे के लिए वैज्ञानिक श्री सिंह और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की भू-जल विद सलाहकार डॉ. स्वाति जैन ने जनपद पंचायत और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के इंजीनियर्स को प्रशिक्षण दिया। गांवों में खनित नलकूपों का वास्तविक सर्वेक्षण कर उनकी गहराई, जलस्तर, केसिंग की जानकारी एकत्रित की गई। ग्रामीणों को रिचार्ज संरचनाओं की उपयोगिता समझाई गई। प्रशिक्षण में मुख्य रूप से रिचार्ज का मापदंड, वर्षा जल का प्रभावी रूप से रिचार्ज होना और प्रदूषण रहित जल से भू-जल पुनर्भरण किये जाने के बारे में बताया गया। वैज्ञानिक श्री सिंह ने बताया कि गांव के ढलान के अनुसार पानी को दिशा देकर 3-3 मीटर के फिल्टर के माध्यम से नलकूपों में पुनर्भरण किया जा सकता है।

भोपाल में जल्द तैयार होगा विश्व स्तरीय खेलों का नया मंच

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल और युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने शुक्रवार को भोपाल स्थित बरखेड़ा नाथू में निर्माणाधीन अंतर्राष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय मापदण्ड के अनुसार निर्माणाधीन अंतर्राष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का लगभग 80 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है और शेष कार्यों को तेजी व गुणवत्ता के साथ शीघ्र पूर्ण किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स प्रदेश के युवाओं को खेल के क्षेत्र में वैश्विक मंच तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाएगा। उन्होंने निर्माण एजेंसियों को जल्द से जल्द गुणवत्तापूर्ण कार्य को पूर्ण करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के

दौरान खेल संचालक श्री राकेश कुमार गुप्ता, संयुक्त संचालक श्री बी.एस. यादव, कांट्रेक्टर, इंजीनियर्स, प्रोजेक्ट मैनेजर सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे। निरीक्षण के दौरान मंत्री श्री सारंग ने एथलेटिक्स स्टेडियम, लाइटिंग सिस्टम, प्रैक्टिस हॉकी फील्ड, वार्म-अप ट्रैक, मल्टीलेवल पार्किंग, फुटबॉल फील्ड, वॉटर एवं सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट और अन्य निर्माण कार्यों का जायज़ा लिया। उन्होंने प्रोजेक्ट की कंस्ट्रक्शन डिटेल्स का प्रस्तुतीकरण भी देखा और तकनीकी पहलुओं पर अधिकारियों से चर्चा की ।मंत्री श्री सारंग ने कहा कि इस सर्वसुविधायुक्त स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के तैयार होने से मध्यप्रदेश में खेलों के लिए एक नया आयाम स्थापित होगा।

हार्टीकल्चर लस्टर विकास कार्यक्रम पर क्षेत्रीय जागरूकता बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय तथा राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, भारत सरकार के समन्वय से मध्यप्रदेश के उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग द्वारा हार्टीकल्चर क्लस्टर विकास कार्यक्रम के अंतर्गत क्षेत्रीय जागरूकता कार्यक्रम सह हितधारक बैठक का आयोजन भोपाल स्थित मध्यप्रदेश उद्योग विकास निगम, पंचानन भवन में किया गया। आयुक्त, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण श्रीमती प्रीति मैथिल ने कहा कि बागवानी क्षेत्र में समग्र विकास, अधोसंरचना विस्तार, बाजार सुविधा, मूल्य संवर्धन एवं किसानों की आमदनी में वृद्धि जैसे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। आयुक्त श्रीमती मैथिल ने प्रदेश से इच्छुक हितधारकों को योजना के अंतर्गत कॉन्सेप्ट नोट एनएचबी पोर्टल पर प्रस्तुत करने के लिये प्रोत्साहित किया और अधिक से अधिक सहभागिता की अपील की। सभी संबंधित एजेंसियाँ एवं निजी संस्थान इस कार्यक्रम में सक्रिय सहयोग करें जिससे बागवानी क्षेत्र को एक नई दिशा और किसानों को बेहतर लाभ मिल सके। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, भारत सरकार के उप संचालक श्री रविन्द्र दांगी ने सीडीपी योजना की विस्तृत जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि योजना के तहत हाई वैल्यू मल्टी कमोडिटी और पेरी अर्बन क्लस्टर्स विकसित किए जाएंगे। इसके लिए एक चिन्हित फोकस फसल होना आवश्यक है और उस फसल का वार्षिक फार्म गेट मूल्य कम से कम 100 करोड़ रुपये होना चाहिए। योजना में वित्तीय सहायता की अधिकतम सीमा फार्म गेट मूल्य के 25 प्रतिशत तक निर्धारित की गई है। बैठक में सीडीपी योजना के अंतर्गत आने वाले मुख्य पैरामीटर, फसल चयन, मूल्यांकन मापदंड, क्लस्टर विकास की प्रक्रिया, किसानों की भागीदारी तथा लाभार्थियों की पात्रता पर भी चर्चा की गई। हितधारकों द्वारा योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अपने सुझाव भी प्रस्तुत किए गए। बैठक में भोपाल संभाग से श्रीमती यशोधरा कल्याण, सीडीपी प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट से श्रीमती नीरू दुबे, श्री एस.के विधान, मध्यप्रदेश कृषि उद्योग विकास निगम, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड, के प्रतिनिधि, तकनीकी विशेषज्ञ ओर निजी क्षेत्र के अन्य हितधारक ऑनलाईन एवं ऑफलाइन माध्यम से उपस्थित रहे।

बिजली चोरी के सूचनाकर्ता को पारितोषिक की पांच फीसदी राशि तुरंत मिलेगी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा बिजली चोरी की रोकथाम के लिए चलाई जा रही पारितोषिक योजना के तहत बिजली के अवैध उपयोग की सूचना देने पर प्रकरण बनाने एवं राशि वसूली होने पर सूचनाकर्ता को दी जाने वाली 10 प्रतिशत प्रोत्साहन राशि में से योजना के संशोधित प्रावधान के अनुसार पांच प्रतिशत राशि का भुगतान संबंधित सूचनाकर्ता को सूचना सही पाए जाने पर जारी किए गए अंतिम निर्धारण आदेश के तुरंत बाद किया जाएगा। शेष पांच प्रतिशत राशि पूर्ण वसूली उपरांत देय होगी। कंपनी में कार्यरत नियमित कर्मचारी/ संविदा/ आउटसोर्स कर्मचारी को भी सूचनाकर्ता के रूप में शामिल किया गया है, परंतु उसे सूचना सही पाए जाने एवं जारी किए गए अंतिम निर्धारण आदेश की पूर्ण वसूली होने पर एक प्रतिशत प्रोत्?साहन राशि के रूप में दी जाएगी। कंपनी ने कहा है कि विभिन्न परिसरों की जांच एवं उसके बाद बनाये गये पंचनामा के आधार पर आरोपी के विरूद्ध निकाली गयी राशि की वसूली में सभी कर्मचारियों का महत?वपूर्ण योगदान रहता है। कंपनी ने विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ जांच एवं वसूली के कार्य में सम्मिलित बाह्य स्त्रोत कर्मचारियों को भी परितोषिक योजना के तहत दी जाने वाली 2.5 (ढाई) प्रतिशत प्रोत्साहन राशि को सभी संबंधितों को समान रूप में दिया जाना निर्धारित किया गया है। कंपनी ने कहा है कि अब पारितोषिक योजना की पूरी जानकारी जैसे बिलिंग एवं भुगतान से संबंधित गतिविधियों को ऑनलाइन कर दिया गया है। अब सूचनकर्ता को कंपनी के पोर्टल पर गुप्?त रूप से दिए गए प्रारूप में बैंक खाता, पहचान क्र. (आधार अथवा पेन) देना अनिवार्य कर दिया गया है। कंपनी द्वारा विद्युत की चोरी के प्रभावी रोकथाम एवं विद्युत के अवैध उपयोग को रोकने के लिए यह योजना चलाई गई है। योजनांतर्गत कोई भी व्यक्ति बिजली के अवैध उपयोग के संबंध में सूचना कंपनी मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय में मुख्य महाप्रबंधक, संचा.संधा/शहर वृत्त कार्यालय के महाप्रबंधकों को लिखित अथवा मोबाईल के साथ ही कंपनी की वेबसाईट पर ऑनलाईन सूचना दे सकते हैं। योजना के अंतर्गत सूचनाकर्ता के संबंध में जानकारी पूर्णत: गोपनीय रखते हुए, कंपनी मुख्यालय से प्रोत्साहन की राशि सीधे संबंधित सूचनाकर्ता के बैंक के खाते में हस्तांतरित की जाती है। इस योजना के अंतर्गत क्षेत्रीय, वृत्त स्तर के अधिकारियों को जो शिकायतें प्राप्त होती है, उन शिकायतों पर तत्परता से कार्रवाई सुनिश्चित किये जाने के लिये कंपनी मुख्यालय के द्वारा सतत रूप से निगरानी रखी जाती है। कंपनी द्वारा योजना में सूचनाकर्ता को निर्धारित शर्तों के अधीन पारितोषिक देने का प्रावधान है। इस राशि की अधिकतम सीमा नहीं है। वर्तमान में इस व्यवस्था को पूर्ण रूप से ऑनलाइन किया गया है तथा कंपनी वेबसाइटपर जाकर लिंक पर क्लिक करके, सूचनाकर्ता के द्वारा गुप्त सूचना दर्ज की जा सकती है

एवं उपाय ऐप के माध्यम से भी

इंदौर एवं उज्जैन संभाग में आने वाले स्थानीय निकायों की समीक्षा बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नगरीय प्रशासन एवं विकास आयुक्त श्री संकेत भोंडवे ने इंदौर में शुक्रवार को उज्जैन और इंदौर संभाग के अंतर्गत आने वाले नगर निगम, नगरपालिका एवं नगर परिषदों के विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में अमृत-2.0, स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के क्रियान्वयन की समीक्षा की गयी। बैठक में कायाकल्प, मुख्यमंत्री नगरीय अधोसंरचना निर्माण योजना, मुख्यमंत्री विकास योजना, चतुर्थ चरण के अंतर्गत हो रहे कार्यों की प्रगति पर चर्चा की गयी ।बैठक में आयुक्त श्री भोंडवे ने निकायों के अधिकारियों से कहा कि विकास कार्यों में तेजी लाने के लिये राजस्व आय बढ़ाने के लिये भी प्रयास हों। बैठक में नगरीय निकायों के कर्मचारियों के वेतन भुगतान की स्थिति, पेयजल आपूर्ति, विद्युत बिलों के भुगतान की

जानकारी प्राप्त की गयी। समीक्षा बैठक में निर्देश दिये गये कि वर्षा के पहले प्रत्येक निकाय अपने क्षेत्र के नालों की सफाई और जीर्णशीर्ण भवनों की स्थिति का आंकलन कर खाली कराने की कार्यवाही अभी से करें। बैठक में सीएम हेल्पलाइन और सीएम मॉनीटर पोर्टल पर प्राप्त जन-शिकायतों एवं घोषणाओं की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली गयी। विभागीय अधिकारियों को उच्च न्यायालय से संबंधित अवमानना प्रकरणों पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिये गये।

हर ईंट में लोक कल्याण की सोच : सड़कें बनीं सामाजिक और आर्थिक समृद्धि की आधारशिला

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश में अधोसंरचना विकास का स्वरूप अब केवल निर्माण कार्यों तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तन की दिशा में निर्णायक भूमिका निभा रहा है। लोक निर्माण विभाग द्वारा लोक निर्माण से लोक कल्याण के मूलमंत्र के साथ सुदृढ़, पारदर्शी और जनहितकारी अधोसंरचना का निर्माण किया जा रहा है। प्रदेश में लोक निर्माण विभाग के अधीन 80,775 किलोमीटर लंबा सड़क नेटवर्क है। इसमें 9,315 किमी राष्ट्रीय राजमार्ग, 11,389 किमी राज्य राजमार्ग, 25,639 किमी मुख्य जिला मार्ग और 34,432 किमी अन्य जिला मार्ग शामिल हैं। यह नेटवर्क प्रदेश के ग्रामीण, शहरी, औद्योगिक और कृषि क्षेत्रों को जोड़ने का कार्य कर रहा है। विगत एक वर्ष से अधिक लगभग 14 महीनों में 6,400 करोड़ रुपये की लागत से 5,500 किमी सड़कों का निर्माण एवं सशक्तिकरण, 345 करोड़ रुपये से 1,500 किमी का डामरीकरण तथा 2,000 करोड़ रुपये से 110 पुलों और एलिवेटेड कॉरिडोर का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में 22,500 करोड़ रुपये की लागत से 10,000 किमी सड़कों और 10,463 करोड़ रुपये से 474 पुलों एवं फ्लाईओवर पर निर्माण कार्य जारी है। ग्वालियर, जबलपुर, भोपाल और इंदौर जैसे प्रमुख शहरों में एलिवेटेड कॉरिडोर के निर्माण को प्राथमिकता दी गई है। प्रदेश में 6 प्रमुख कॉरिडोर परियोजनाएं नर्मदा प्रगतिपथ, विंध्य एक्सप्रेस-वे, मालवा-निमाड़ कॉरिडोर, अटल प्रगति पथ, बुंदेलखंड कॉरिडोर और मध्य भारत विकास पथ प्रारंभ की गई हैं। ये पिछड़े क्षेत्रों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ेंगी। प्रदेश के लगभग सभी राष्ट्रीय राजमार्गों को 4 लेन में परिवर्तित करने की योजना में अब तक 4,740 किमी मार्गों को 4 लेन में बदला जा चुका है। शेष 3,050 किमी पर कार्य जारी है। मध्यप्रदेश शासन और राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (ह।ह्व) के बीच 1 लाख करोड़ रुपये की लागत से 4,010 किमी लंबाई की 22 नई सड़क परियोजनाओं हेतु ऐतिहासिक समझौता हुआ है।

इसमें इंदौर-भोपाल, भोपाल-जबलपुर हाईस्पीड ग्रीनफील्ड कॉरिडोर, लखनऊ-रायपुर एक्सप्रेसवे, आगरा-ग्वालियर, उज्जैन-झालावाड़, सतना-चित्रकूट और रीवा-सीधी जैसे महत्त्वपूर्ण मार्ग शामिल हैं ।उज्जैन महाकुंभ-2028 को ध्यान में रखते हुए इंदौर-उज्जैन मार्ग का 6 लेन में चौड़ीकरण तथा उज्जैन-जावरा ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे का कार्य तेज़ी से चल रहा है। यह प्रदेश का पहला पूर्ण ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस-वे होगा ।साथ ही उज्जैन के

अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और जीवन कौशल का उत्सव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क ने इस सप्ताह ज़िंदगी के रंग नामक एक प्रेरणादायक और सृजनात्मक श्रृंखला की शुरुआत की, जो युवाओं को आत्म-अभिव्यक्ति का एक प्रभावशाली मंच देने और उनके भीतर छिपी रचनात्मकता एवं जीवन कौशल को उजागर करने की एक अनूठी पहल है। तीन दिवसीय आयोजन में पेंटिंग, अभिनय और फोटोग्राफी जैसे कला रूपों के माध्यम से प्रतिभागियों को न केवल अपनी भावनाओं और दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने का अवसर मिला, बल्कि उन्होंने नेतृत्व, टीम भावना और आत्मविश्वास जैसे महत्वपूर्ण जीवन मूल्यों को भी आत्मसात किया। श्रृंखला में पहले दिन, प्रसिद्ध लाइफ कोच सायंती अधिकारी के सान्निध्य में छात्रों ने रंगों के ज़रिए अपने विचारों और भावनाओं को कैनवास पर साकार किया। दूसरे दिन, सौरभ अनंत और विहान आर्ट ग्रुप के सहयोग से प्रतिभागियों ने अभिनय के माध्यम से संवाद, अभिव्यक्ति और मंचीय आत्मबल को निखारा। तीसरे दिन अनुभवी फोटोग्राफर भावना जायसवाल ने छात्रों को फोटोग्राफी की तकनीकी बारीकियों और रचनात्मक दृष्टिकोण से परिचित कराया, जिससे उन्होंने कैमरे की आंख से दुनिया को नए अंदाज़ में देखना सीखा।

हर सत्र में विद्यार्थियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने यह सिद्ध किया कि युवा प्रतिभाएं जब सही दिशा और मंच पाती हैं, तो वे सीमाओं को लांघ सकती हैं।

जीएसपी के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री गिरीश शर्मा के मार्गदर्शन ने छात्रों में ऊर्जा और प्रेरणा का संचार किया। ज़िंदगी के रंग केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि तस्क्क की उस प्रगतिशील सोच की झलक है, जिसमें शिक्षा को तकनीकी प्रशिक्षण से आगे बढ़ाकर समग्र व्यक्तित्व निर्माण का साधन बनाया गया है।

बायर-सेलर मीट में समूहों के उत्पादों में रूचि दिखाई क्रेताओं ने

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्व-सहायता समूहों के उत्पादों की विक्री हेतु भोपाल में आयोजित की गई दो दिवसीय बायर-सेलर मीट में बडी संख्या में बायर पहुंचे। क्रेताओं ने समूहों के उत्पादों में अपनी रूचि दिखाई। इस दौरान समूहों से सामग्री खरीदने के लिये 16 व्यापारिक अनुबंध किये गये, जिसके तहत लगभग साढे नौ हजार टन सामग्री क्रय की जायेगी। इसमें मुख्य रूप से आलू, गेहूं, चावल, दाल, मूंगफली, मोरिंगा पावडर तथा सरसों का तेल आदि शामिल है। इसी प्रकार गैर कृषि आधारित उत्पादों के अंतर्गत कलात्मक बस्तुओं में 200 गौंड पेण्टिंग तथा लगभग 2 लाख रूपये की बैगा कलाकृतियां खरीदने का अनुबंध तथा ई-सरस दिल्ली द्वारा शिवपुरी जिले के बदरवास की जैकेट व मंदसौर जिले के फ्रूट शर्बत की विक्री हेतु वेण्डर के रूप पंजीयन किया गया। इसके अलावा मिलेट एवं मिलेट उत्पाद, सरसों, गेहूं एवं मक्का के लिये लॉजिस्टिक सपोर्ट हेतु सहमति बनी। ज्ञातव्य है कि मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा महिला स्व-सहायता समूहों के उत्पादों की बिक्री में बढोत्तरी के लिये बायर सेलर मीट का आयोजन भोपाल के अरेरा हिल्स स्थित विकास भवन के सभागार में किया गया था।

सतना में 500 फीट लंबी तिरंगा यात्रा, राज्यमंत्री और सांसद समेत हजारों लोगों ने लिया हिस्सा

मुस्लिम समाज ने किया स्वागत

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में शनिवार को सर्व समाज के तत्वावधान में एक भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। इस यात्रा में 500 फीट लंबा तिरंगा लेकर हजारों लोग सड़कों पर उतरे और देशभक्ति का प्रदर्शन किया। तिरंगा यात्रा का नेतृत्व राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, सांसद गणेश सिंह और महापौर योगेश ताम्रकार ने किया। सभी प्रमुख जनप्रतिनिधि यात्रा में शामिल होकर लोगों को प्रेरित करते नजर आए। यात्रा की शुरुआत शाम 5.30 बजे गुरु नानक दरबार सिटी कोतवाली से हुई। सबसे आगे भारत माता की झांकी वाला रथ चल रहा था, जो लोगों का मुख्य आकर्षण रहा। सर्व समाज के लोग, युवा, महिलाएं और बच्चे बड़ी संख्या में शामिल हुए। पूरे रास्ते में लोगों ने "भारत माता की जय" और "वंदे मातरम्" के नारे लगाए। कई स्थानों पर यात्रा का पुष्पवर्षा से स्वागत किया गया।

यात्रा के दौरान मुस्लिम समाज के लोगों ने भी तिरंगा लेकर यात्रा का स्वागत किया और "हिंदुस्तान जिंदाबाद" के नारों से माहौल देशभक्ति से भर दिया।

यह यात्रा भारतीय सेना की वीरता और 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता के सम्मान में निकाली गई थी। महापौर योगेश ताम्रकार ने कहा कि सेना ने आतंकियों को जवाब देकर साबित कर दिया कि भारत अब आतंकवाद को बर्दाश्त नहीं करेगा।

सतना और मैहर जिले की सिंचाई और जल परियोजनाओं की समीक्षा

बारिश से पहले नहरों का कार्य तेजी के साथ पूर्ण करें-सांसद

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सांसद गणेश सिंह ने कहा कि आगामी बरसात से पहले सिंचाई परियोजनाओं की नहरों और जल जीवन मिशन के पाइप लेइंग का कार्य तेजी से करते हुए निर्धारित लक्ष्य को पूर्ण करने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि सिंचाई संबंधी कार्यों में मुख्य नहर का काम प्राथमिकता से करें। नहरों के निर्माण में भू-अर्जन की जो भी बाधायें है। उन्हें टीएल की बैठक में कलेक्टर के ध्यान में लाकर विभागों के समन्वय से तत्काल निराकृत करें। सर्किट हाउस सतना में बाण सागर नहर परियोजना, जल जीवन मिशन और भू-अर्जन, बरगी नहर परियोजना के अधिकारियों की बैठक लेकर सांसद श्री सिंह ने सिंचाई और जल परियोजनाओं की समीक्षा की। इस मौके पर नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, विधायक नागौद नागेन्द्र सिंह, विधायक चित्रकूट सुरेन्द्र सिंह गहरवार, कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस, एसडीएम मैहर विकास सिंह, भू-अर्जन अधिकारी सुधीर बेक, कार्यपालन यंत्री नागौद बरगी नहर अजय सिंह, जागृह भगत, जल जीवन मिशन के महाप्रबंधक विवेक कुमार, कार्यपालन यंत्री पीएचई डीएन कनेल, कार्यपालन यंत्री बाणसागर आरएस नट, कार्यपालन यंत्री जल संसाधन राकेश कुमार वर्मा सहित कार्यकारी एजेंसियों से संबंधित ठेकेदार भी उपस्थित थे।

बरगी व्यपवर्तन परियोजना के कार्यों की समीक्षा में बताया गया कि सतना जिले में नागौद, सतना शाखा नहर, आरडी 33.30 से 131.40 कि.मी. वितरण प्रणाली सहित रीवा शाखा नहर की आंशिक लम्बाई 60 कि.मी. वितरण प्रणाली का निर्माण कार्य प्रगतिरत है। इसमें सतना जिले के 99 हजार 194 हेक्टेयर कृषि भूमि में सिंचाई के लिए पानी दिया जाना प्रस्तावित है। बरगी व्यपवर्तन परियोजना में आरडी 104 कि.मी. से 116 कि.मी. स्लीमनाबाद टनल का कार्य कटनी जिले में चल रहा है। जिसकी कुल लम्बाई 11.95 कि.मी. है। अब तक 10.85 कि.मी. टनल का निर्माण हो चुका है और 1100 मीटर टनल का कार्य किया जाना शेष है। सांसद श्री सिंह ने कहा कि स्लीमनाबाद में नहर निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है और नर्मदा का पानी टनल के इस पार अक्टूबर-नवम्बर माह तक आने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि इसके पहले सतना जिले की शेष नहरों का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया जाये। बैठक में सिंहपुर बांध, भैंसवार बांध सिंचाई परियोजनाओं की समीक्षा की गई। जल संसाधन विभाग के कार्यपालन यंत्री ने बताया कि सिंहपुर बांध एक्वाडट से पानी सिपेज का रोकने 9 लाख रूपये की कार्ययोजना प्रस्तावित की गई है। बाणसागर परियोजना के पथंडा, बिरसिंहपुर माइनर और माइक्रो नहर वितरण प्रणाली की जानकारी भी ली गई।

सांसद श्री सिंह ने कहा कि अभी किसानों के खेत खाली पडे हुए है। यही नहरों के कार्य करने का अच्छा समय है। जिन किसानों के मुआवजा के अवार्ड पारित हो गये हैं। उनके खाते में राशि पहुंचाकर कार्य प्रारंभ किये जाये। इसके साथ ही सिंचित, असिंचित भूमि से संबंधित लंबित प्रकरणों को राजस्व रिकार्ड से सुधार कर एक सप्ताह के भीतर निराकरण सुनिश्चित करें। जल जीवन मिशन की समीक्षा में बताया गया कि सतना जिले में बाणसागर परियोजना से जल निगम द्वारा दो चरणों में मल्टी विलेज स्कीम क्रि यान्वित की जा रही है। प्रथम फेज में 3 लाख 2 हजार घरों में नल जल के कनेक्शन देना है। जिसमें से अब तक 90 हजार घरों में पानी दिया जा रहा है। कुल 292 टंकियों में से 179 टंकियां का कार्य पूरा कर लिया गया है। शेष प्रगतिरत है और 38 टंकियों का कार्य शीघ्र शुरू किया जायेगा। सांसद ने कहा कि प्रथम फेज की टंकियां का निर्माण कार्य शीघ्र पूरा करें और गांव की बसाहट के प्रत्येक घर में नल से जल पहुंचाना सुनिश्चित कर गांव को शत-प्रतिशत रूप से कवर करें।

परियोजना के प्रथम फेज का कार्य मार्च 2026 तक पूर्ण करने की जानकारी दी गई। द्वितीय चरण के मल्टी विलेज स्कीम के बारे में बताया गया कि लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा क्रि यान्वित इस योजना में इंटेक वेल का निर्माण हो गया है तथा डब्ल्यू टीपी और एच टीपी का निर्माण किया जा रहा है। इस परियोजना से मझगवां के 304 गांव, सोहावल के 238 और नागौद के 249 गांव को पेयजल दिया जायेगा। इसके अलावा लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा इन तीन विकासखण्डों में 232 पेयजल योजनायें संचालित की जा रही है। इन परियोजनाओं के लिए भी जल जीवन मिशन के तहत दिया जायेगा। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने कहा कि जल जीवन मिशन द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में किए गए रेस्टोरेशन कार्य की जानकारी प्रस्तुत करें।

मिट्टी के पोषक तत्व और गुण बताता है मृदा स्वास्थ्य कार्ड

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारत सरकार द्वारा स्वाइल हेल्थ कार्ड यानी मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना लागू की गई है। इस योजना के तहत किसान सिंचित क्षेत्र में 2.5 एकड़ तथा असिंचित क्षेत्र में 10 एकड़ क्षेत्र से मिट्टी का नमूना लेकर उसकी जाँच कराते हैं। यह जाँच कृषि विभाग द्वारा की जाती है। कृषि विभाग द्वारा मिट्टी के नमूने लिए जाने पर इसकी जाँच पूरी तरह से निःशुल्क रहती है। यदि किसान स्वयं सेंपल लेकर जाता है तो मिट्टी के नमूने की जाँच के लिए अनुसूचित जाति और अनुसूचित जाति के किसान को तीन रुपए तथा सामान्य वर्ग के किसान को पाँच रुपए प्रति नमूना शुल्क देना होता है। मिट्टी में माइक्रो न्यूट्रेंट की जाँच कराने के लिए अनुसूचित जाति और जनजाति के किसानों को 30 रुपए तथा सामान्य वर्ग के किसानों को 40 रुपए शुल्क देना होता है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड से किसान को उसके खेती की मिट्टी के गुणों तथा पोषक तत्वों की जानकारी मिलती है। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि मिट्टी के पोषक तत्व के आधार पर किसान को उचित फसल की सलाह दी जाती है। मिट्टी में यदि पोषक तत्व की कमी है तो उसके अनुरूप उर्वरक के उपयोग का सुझाव दिया जाता है।

महर्षि विद्या मंदिर रीवा के छात्रों को सम्मानित किया गया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। 15 मई सी.बी.एस.ई. नई दिल्ली द्वारा कक्षा 10वीं एवम 12वीं का परीक्षा परिणाम दिनांक 13/05/2025 को घोषित किया गया। प्राप्त परीक्षा परिणाम के अनुसार महर्षि विद्या मंदिर कोष्ट रीवा का 10वीं एवम 12वीं दोनो कक्षाओ का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा। कक्षा 12वीं में सागर सिंह ने 91% अंको के साथ शिखा द्विवेदी 86% अंको के साथ और सूरज जायसवाल 80.2% के साथ परीक्षा उत्तीर्ण की। कक्षा 10वीं में नितीन जायसवाल 92%, काव्य गुप्ता 85.6%, आर्यन तिवारी 84.2, पूजा पाण्डेय 82.6%, वृजनंदन पाण्डेय 80.8% और सौम्या पाण्डेय 80.6 अंको के साथ परीक्षा उत्तीर्ण कर अपने माता-पिता और विद्यालय का नाम रोशन किया। सभी बच्चो को प्राचार्य एवम विद्यालय परिवार द्वारा हार्दिक शुभकानाए एवम बधाई देकर उज्जवल भविष्य की कामना की गई। एवम उपरोक्त बच्चो को विद्यालय में बुलाकर फूलमाला पहनाई गई एवम मिठाई खिलाकर उनको सम्मानित कर उत्साहवर्धन किया गया।

नवागत सीईओ का स्वागत और स्थानांतरित सीईओ का विदाई समारोह हुआ आयोजित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। त्योंथर जनपद पंचायत सभा गार में नवागत जनपद सी.ई.ओ.प्रवीण बंसोड जी का पंचायत सचिव ,रोजगार सहायक सहित पंचायत कर्मी ने किया स्वागत वही त्योंथर जनपद पंचायत से रामपुर बघेलान सतना जप स्थानांतरित सीईओ राहुल पाण्डेय जी का विदाई समारोह कार्यक्रम रखा गया।इस दौरान तत्कालीन जनपद सी.ई.ओ. पाण्डेय जी की त्योंथर जनपद में पदस्थ रहने के दौरान कार्यकुशलता की जमकर प्रशंसा हुई।आपको बता दे राहुल पाण्डेय जी जब से त्योंथर जनपद पंचायत की कमान संभाले थे तब से लेके स्थानांतरण होने के बाद पद भार मुक्त नहीं हुए तब तक केंद्र और राज्य सरकार की जन हितैषी योजनाओं को पात्र हितग्राहियों को लाभ दिलाने में प्रयास कर कामयाब रहे।पाण्डेय जी मनिका गांव में हुए बोर बेलकांड के दौरान घटना की जान कारी मिलते ही सबसे पहले ग्राउंड जीरो में पहुंचकर लगातार जब तक रेस्क्यू पूरा नहीं हुआ तब तक कड़ी मेहनत की साथ ही महाकुंभ के दौरान जब ह्वा 30 रोड में वाहनों की पहिया थम गई थी तो जनपद पंचायत सी.ई.ओ. राहुल पाण्डेय ने वरिष्ठ अधिकारी के निर्देश पहले ही पंचायत कर्मी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अनवरत तीर्थ यात्रियों को भोजन पानी की व्यवस्था कराए।श्री पाण्डेय जी कार्यकुशलता की प्रशंसा हर ग्राम पंचायत में हो रही है। हर कोई खुश रहा वही श्री पाण्डेय जी ने विचार व्यक्त करते हुआ कहा कि त्योंथर जनपद पंचायत में पदस्थ सचिव, रोजगार सहित पंचायत कर्मी और जन प्रतिनिधि हमेशा कर पल सरकार की जनहितैषी योजनाओं को पात्र हितग्राहियों तक पहुंचाने में सदैव अव्वल रहे हैं।

मै जहां भी रहूंगा तो त्योंथर के लोगो,कर्मचारी सहित सबको धन्यवाद देता हू और जीवन भर आभारी रहूंगा वही विदाई समारोह कार्यक्रम में जनपद अध्यक्ष, उपाध्यक्ष त्योंथर रहा एस.डी.एम.संजय जैन , जनपद पंचायत सदस्य वेदप्रकाश तिवारी ,पत्रकार राजन शुक्ला,अरविंद तिवारी,अंकित शुक्ला, गौरव मिश्रा, आजाद अनिकेत,सहित सभी सरपंच गण, सरपंच प्रतिनिधि सहित तमाम पंचायत कर्मी सहित अन्य लोग रहे मौजूद वही विदाई समारोह कार्यक्रम का सफल संचालन सामाजिक सुरक्षा विस्तार अधिकारी अरविंद तिवारी ने किया।

रामभद्राचार्य महाराज को सम्मानित किए जाने पर दी हार्दिक बधाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा पूज्य संत, पद्मविभूषित जगद्गुरु तुलसीपीठाधीश्वर, रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज को संस्कृत भाषा और साहित्य के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान हेतु प्रतिष्ठित 'ज्ञानपीठ पुरस्कार-2023' से सम्मानित किए जाने पर हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें आत्मीय बधाई दी है। उपमुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि जग–ुरु रामभद्राचार्य जी का संपूर्ण जीवन त्याग, तपस्या, विद्वता और करुणा का अनुपम संगम है। उन्होंने शारीरिक सीमाओं के बावजूद ज्ञान, संस्कृति और संस्कृत साहित्य के संवर्धन हेतु जो कार्य किया है, वह समूचे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत है। उनका यह सम्मान वास्तव में उस सनातन चेतना का सम्मान है, जो भारत की आत्मा में प्रवाहित होती है। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि संस्कृत भाषा और दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए जग–ुरु जी ने जो अनथक साधना की है, वह एक युगद्रष्टा संत की पहचान है। ज्ञानपीठ जैसा सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान उनके तप और कर्म की स्वीकृति है।

यह केवल एक संत का नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति और परंपरा का गौरव है। उल्लेखनीय है कि जग–ुरु रामभद्राचार्य जी जन्म से दृष्टिबाधित होने के बावजूद रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद, दर्शन और संस्कृत साहित्य में अप्रतिम विद्वान हैं। वे अनेक भाषाओं में निपुण हैं और उन्होंने दर्जनों ग्रंथों की रचना की है। वे तुलसीपीठ, चित्रकूट के अधिष्ठाता हैं और शिक्षा, दिव्यांगजन सेवा व धर्म के क्षेत्र में अनेक संस्थाओं के माध्यम से कार्य कर रहे हैं।

उप मुख्यमंत्री ने रीवा शहर में निर्माणाधीन विकास कार्यों की समीक्षा की

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि रीवा शहर में निर्माणाधीन विकास कार्यों को पूर्ण गुणवत्ता के साथ समय सीमा में पूरा कराया जाए तथा आगामी 15 जून को जिला चिकित्सालय के विस्तार भवन एवं ओपीडी का लोकार्पण कराएं।

राजनिवास सर्किट हाउस में आयोजित समीक्षा बैठक में उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने पीआईयू द्वारा पुनर्घनत्वीकरण योजनान्तर्गत 65 करोड़ रुपए की लागत से निर्माणाधीन विकास कार्यों को गति देकर शीघ्रता से पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने व्यंकट क्लब भवन तथा पीडब्ल्यूडी भवन का शेष निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण करने के लिए संबंधित निर्माण एजेंसियों को निर्देशित किया। कोल भवन के शेष निर्माण कार्य सहित बाउन्ड्रीवाल का कार्य कराने तथा पीके स्कूल सांदीपनी विद्यालय के निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि दिसम्बर तक सांदीपनी विद्यालय का निर्माण कार्य पूरा करें। उन्होंने ढेकहा तिराहा से करहिया मण्डी तक सड़क निर्माण कार्य को वर्षाकाल से पूर्व पूरा करने के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री ने रीवा बायपास फोरलेन के निर्माण के लिए शेष अर्जित भूमि का अधिग्रहण कर निर्माण एजेंसी को हस्तांतरित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 19 किलोमीटर लंबाई का बायपास सर्विस रोड के साथ फोरलेन बन रहा है। इसके कार्य में व्यवधान न हो तथा यह कार्य समय सीमा में पूर्ण हो जाए। उन्होंने लायब्रेरी भवन सहित अन्य शासकीय भवनों के रूके हुए निर्माण कार्य को शीघ्र प्रारंभ कराने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल, आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े, राजेश पाण्डेय सहित विभिन्न निर्माण विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

जाहिर सूचना

क्र0-04/25, दिनांक- 17/05/2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती माला सोनकर पत्नी अशोक कुमार सोनकर, निवासी वार्ड नं.-45, डालीबाबा रोड हरिजन कॉलोनी, टिकुरिया टोला, सतना, तहसील रघुराजनगर, जिला सतना (म.प्र.) ने भूमि खसरा नं0-91/1/1/33 रकवा 0.0110 हे. अर्थात 30 × 40 =1200 sqft. स्थित ग्राम डेलौरा, वार्ड नं.-45, मालवीय वार्ड, पटवारी हल्का डेलौरा, तहसील रघुराजनगर, जिला सतना (म.प्र.) को बंधक कर सेन्ट्रम हाउसिंग फाइनेन्स लिमिटेड, शाखा सतना, प्रथम तल नायक भवन, परिजात निवास गली बम्हनगवां, सतना (म.प्र.) से ऋण प्राप्त किया गया है। जिसके एवज में श्रीमती माला सोनकर द्वारा अपने स्वामित्व की मूल विक्रय पत्र एवं मूल ऋण पुस्तिका क्र. L.ST. 18-0015623 को संस्था में निक्षेप किया था ।

उक्त मूल ऋण पुस्तिका क्र. L.ST. 18-0015623 संस्था से कहीं गुम हो गई है, जो कि काफी खोजबीन के पश्चात संस्था को नहीं मिल रही है।

यह कि गुम हुई मूल ऋण पुस्तिका क्र. L.ST. 18-0015623 जिस किसी व्यक्ति/संस्था को भी अगर मिले तो वह दस्तावेज के मेरे कार्यालय में अथवा आधार हाउसिंग फाइनेन्स लिमिटेड, शाखा शहडोल अथवा सेन्ट्रम हाउसिंग फाइनेन्स लिमिटेड, शाखा सतना, प्रथम तल नायक भवन, परिजात निवास गली बम्हनगवां, सतना (म.प्र.) में प्रस्तुत करें। जाहिर सूचना 07 दिवस के अंदर मूल ऋण पुस्तिका क्र. L.ST. 18-0015623 प्राप्त न होने की दशा में डिजिटल ऋण पुस्तिका जारी कर प्रदान की जावेगी जो मूल ऋण-पुस्तिका के रूप में मान्य होगी ।

भवदीय
राजेन्द्र त्रिपाठी, एडवोकेट
जिला एवं सत्र न्यायालय रीवा (म.प्र.)

जाहिर सूचना

क्र0-03/25, दिनांक- 14/05/2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि रामदरस शर्मा तनय चन्द्रशेखर प्रसाद, निवासी रामनिरंजन नगर, समान, रीवा, तहसील हुजूर जिला रीवा (म.प्र.) भूमि खसरा न.-759/1/5 रकवा 0.0140 हे. अर्थात 30 × 50=1500 sqft. स्थित ग्राम समान, ज.नं.-580, पटवारी हल्का समान, तहसील हुजूर नगर, जिला रीवा (म.प्र.) के दर्ज अभिलेख भूमिस्वामी है। उक्त भूमि रामदरस शर्मा ने विक्रेता जय नारायण शर्मा तनय श्री रामनिरंजन शर्मा, निवासी रामनिरंजन नगर, समान रीवा तहसील हुजूर जिला रीवा (म.प्र.) से जरिये विक्रय पत्र क. 3964, पुस्तक क्र. A-1, ग्रंथ क्र.-5023, पेज 22+26 दिनांक 03/10/2002 उपपंजीयक कार्यालय रीवा (म.प्र.) के माध्यम से क्रय की थी। उक्त मूल विक्रय पत्र विलेख में 5,000/- रूपये के स्टाम्प कम है. जो कि त्रुटिवश कहीं गुम हो गये हैं, जो कि काफी खोजबीन के पश्चात भूमिस्वामी को नहीं मिल रहे हैं। मूल विक्रय पत्र की सत्यप्रति उपपंजीयक कार्यालय रीवा से प्राप्त कर ली गई है।

यह कि मूल विक्रय पत्र क्र.- 3964 दिनांक 03/10/2002 के गुम हुये स्टाम्प जिस किसी के पास हो अथवा उक्त सम्पत्ति पर लिये जा रहे ऋण के संबंध में यदि कोई विधिक वारिस या हित रखने वाला व्यक्ति मौजूद हो या कोई हित रखता हो तो अथवा उपरोक्त प्रस्तावित लोन के संबंध में आपत्ति हो तो वह अपनी लिखित आपत्ति इस जाहिर सूचना के 07 दिन के अंदर मय दस्तावेज के मेरे कार्यालय में अथवा आधार हाउसिंग फाइनेन्स लिमिटेड, शाखा शहडोल अथवा आधार हाउसिंग फाइनेन्स लिमिटेड, शाखा रीवा, तृतीय तल मित्रा हाईट्स, कॉलेज चौराहा, रीवा (म.प्र.) में प्रस्तुत करें अन्यथा बाद में किसी भी प्रकार की आपत्ति मान्य नहीं होगी तथा भावी ऋणी को ऋण प्रदान कर दिया जायेगा।

भवदीय
राजेन्द्र त्रिपाठी, एडवोकेट
जिला एवं सत्र न्यायालय रीवा (म.प्र.)

संपादकीय

यह ग्लेशियर की मौत की शोकसभा नहीं अपितु भावी संकट का है संकेत

अभी दो चार दिन पहले ही भारत, भूटान, नेपाल और चीन के चुनिंदा ग्लेशियलोजिस्टों ने समुद्र तल से करीब 5100 मीटर उंचे याला ग्लेशियर के मौत की अनोखी शोकसभा का आयोजन कर दुनिया के देषो को ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव के प्रति सावचेत करने का प्रयास किया है। हांलाकि किसी ग्लेशियर की मौत की विधिवत घोषणा और मातम सभा के आयोजन का यह कोई पहला मौका नहीं है। पिछले सात सालों में यह तीसरा मौका है जब ग्लेशियर की मौत की शोक सभा का आयोजन और उस स्थल पर पट्टिका लगाने का काम हुआ है। इससे पहले 2019 में आइसलैण्ड के ओक और 2021 में मैक्सिको के ओयोलोको ग्लेषियर के मौत की शोकसभा का आयोजन किया जा चुका है। ग्लोबल वार्मिंग दुनिया को किस दिशा में ले जा रही है और किस तरह के प्रभाव हमें पिछले सालों से लगातार देखने को मिल रहे हैं उनमें से ग्लेशियरों के नष्ट होना तो केवल और केवल एक पक्ष मात्र है। जबकि ग्लोबल वार्मिंग के चलते ग्लेशियरों के पिघलने के बारे में विशेषज्ञ वैज्ञानिक लगातार सावचेत करते रहे हैं। जब कोई ग्लेशियर इस हालात में आ जाता है कि उसका मूवमेंट ही लगभग समाप्त हो जाता है तो वह ग्लेशियर मृत श्रेणी में आ जाता है। दुनियाभर में ग्लेशियरों के पिघलने की गति तेज बढ़ती जा रहे हैं। ग्लेशियरों के पिघलने के कारण समुद्र का जल स्तर बढ़ता जा रहा है। समुद्र के जल स्तर के बढ़ने के कारण समुद्र किनारे के कई शहरों के सामने डूबने का संकट दिखाई दे रहा है। यह तो केवल एक पहलू है। ग्लोबल वार्मिंग और ग्लेशियरों के पिघलने के कारण सूखा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, तापमान में अत्यधिकता जैसे साल दर साल गर्मी में तेजी और असमय तेज गर्मी, तेज वर्षात और तेज सर्दी प्रभावित कर रही है। जंगलों में आग के कारण जिस तरह से जंगल और जंगल की जीव विविधता प्रभावित हो रही है और जंगल रेगिस्तान में तब्दील हो रहे हैं यह अपने आपमें गंभीर है। इसी तरह से मौसम में अनावश्यक बदलावों के कारण नई नई बीमारियों के साथ ही विलुप्त बीमारियां जैसे मलेरिया और वायरस जनित बीमारियों का बढ़ता प्रकोप, दवाओं की असरता कम होना और ना जाने इस तरह के क्या क्या परिणाम भुगतने पड़ रहे हैं यह आज सारी दुनिया के सामने हैं। ग्लोबल वार्मिंग के चलते सूखा और रेगिस्तान का विस्तार लगातार होता जा रहा है। पिछले सालों में दुनिया के देशों में चक्रवातों का चक्र तेजी से बदला है और तूफानों की तीव्रता और फ्रिक्वेंसी में तेजी आई है। इसके साथ ही भूकंपों की सक्रियता बढ़ रही है। अब तूफान और भूकंपों की फ्रिक्वेंसी तो इस कदर बढ़ गई है कि कब भूकंप आ जाये और कब समुद्र तट की और बढ़ते तूफान की घोषणा हो जाए यह आये दिन देखने को मिल रहा हे। दुनियाभर के देश ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभावों से प्रभावित है। जिस तरह के बडे बड़े सम्मेलनों में दुनिया के नेता ग्लोबलवार्मिंग को लेकर चिंतन मनन को जुट तो जाते हैं पर परिणाम अभी तक जो सामने दिखाई दे रहे हैं पह गंभीर संकट की और साफ इशारा समझने की आवश्यकता है।

सनातन हिंदू धर्म एवं भारत में उत्पन्न समस्त मत पंथ विश्व में शांति चाहते हैं

भारत में सनातन हिंदू धर्म तो अनादि एवं अनंत काल से चला आ रहा है परंतु बाद के खंडकाल में भारत में कई अन्य प्रकार के मत पंथ भी विकसित हुए हैं जैसे बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म आदि। भारत में विकसित विभिन्न मत पंथ मूलतः सनातन हिंदू संस्कृति का ही अनुपालन करते हुए दिखाई देते हैं और ऐसा कहा जाता है कि यह समस्त मत पंथ सनातन हिंदू धर्म की विभिन्न धाराएं ही हैं। भारत में विकसित मत पंथ सामान्यतः अपने दर्शन, कर्मकांड एवं सामाजिक ताने बाने के दायरे में अपने धर्म का अनुपालन करते हैं। भारत में हिंदू धर्म के सिद्धांतों पर चलने वाले नागरिकों की संया सबसे अधिक हैं एवं यह भारत का सबसे बड़ा धर्म है, जिसमें विभिन्न देवी देवताओं और पूजा प्रथाओं की एक विस्तृत प्रणाली शामिल है।

भारत में विकसित हुए मत पंथों में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के आधार पर हुई है। यह शिक्षाएं मानव जीवन से दु:ख और उसके कारणों को दूर करने के सम्बंध में हैं। बौद्ध धर्म में ध्यान, प्रेम एवं करुणा पर जोर दिया जाता है। बौद्ध धर्म में कर्मकांड के महत्व को भी रेखांकित किया गया है परंतु इसका उद्देश्य ईश्वर की आराधना नहीं बल्कि मोक्ष की प्राप्ति करने से है।

भारत में ही विकसित तीसरा महत्वपूर्ण मत पंथ है सिख धर्म जिसकी स्थापना श्री गुरु नानक देव जी ने की थी। सिख धर्म ईश्वर में विश्वास, सेवा, समानता एवं सत्यनिष्ठा पर आधारित है। सिख धर्म में ईश्वर की उपासना की जाती है परंतु यह उपासना कर्मकांड से परे हैं।

भारत की सनातन हिंदू संस्कृति को पूरे विश्व में अति प्राचीन संस्कृति के रूप में देखा जाता है। मूल रूप से भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति में आध्यात्म का विशेष महत्व है जिसके अंतर्गत वसुधैव कुटुंबकम, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, विश्व का कल्याण हो किसी भी जीव का अहित न हो जैसे भावों पर अमल करने का प्रयास किया जाता है। भारत में चूंकि मनुष्य के साथ साथ जीव जंतुओं, नदियों, पहाड़ों, पेड़ पौधों एवं जंगलों, आदि में भी ईश्वर का वास माना जाता है इसलिए किसी भी जीव को कोई क्षति न हो इस भावना को न केवल को आगे बढ़ाया जाता है बल्कि इस सिद्धांत पर अमल भी किया जाता है। इसीलिए भारत मूलत: शांतिप्रिय देश माना जाता है तथा भारत में हिंसा के लिए तो कोई जगह ही नहीं है। भारत के धर्मग्रंथों में भी जाने अनजाने में भी की गई जीव हत्या को पाप की संज्ञा दी गई है। सनातन हिंदू संस्कृति के ग्रंथों, उपनिषदों, आदि द्वारा काम, कर्म एवं अर्थ को धर्म के साथ जोड़कर ही सम्पन्न करने के उपदेश दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए, महाभारत में वेद व्यास जी ने धर्म के आठ तरीके बताए हैं – यज्ञ – जिसका आश्य है कि ऐसा कर्म जो समाज के लाभ के लिए किया जाता है। दान – समाज की सहायता करना। तप – अर्थात स्वयं में सुधार करते रहना, स्वयं का मूल्यांकन करना तथा नकारात्मक गुणों को दूर कर सकारात्मक गुणों का विस्तार करना। सत्यम् – सत्य के मार्ग पर चलना। (1) क्षमा –दूसरों तथा स्वयं को गलतियों के लिए क्षमा करना। दंभ – इंद्रियों को वश में रखना। आलोभ – लालच नहीं करना एवं लालच में न आना। अध्ययन – स्वयं और दुनिया का अध्ययन करना। सनातन हिंदू धर्म एवं भारत में उत्पन्न मत पंथों के अनुयायी सामान्यत: धर्म के उक्त वर्णित आठ तरीकों पर चलने का प्रयास करते पाए जाते हैं। धर्म की इस राह पर चलकर उन्हें समाज में शांति पूर्वक रहने की प्रेरणा मिलती है एवं अंतत: उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इसके साथ ही, विश्व के अन्य देशों में विकसित मत पंथों का अनुसरण करने वाले नागरिक भी भारत में पर्याप्त मात्रा में निवास करते हैं जैसे यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम के अनुयायी, आदि। विश्व के अन्य भागों में विकसित उक्त वर्णित मत पंथों को सेमेटिक रिलिजन की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि इनकी साझा उत्पत्ति एवं कुछ सामान्य अवधारणाएं होती हैं, जैसे एक ही ईश्वर में विश्वास, नैतिकता एवं कर्मकांड।

यहूदी धर्म एक धर्मग्रंथ (ताल्मुद) पर आधारित है। इस धर्मग्रंथ में यहूदी लोगों की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाया गया है। यहूदी धर्म सेमेटिक धर्म की श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें एक ईश्वर (येहव) में विश्वास, अनुष्ठान एवं नैतिक नियमों का पालन किया जाता है। ईसाई धर्म ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है, जो एक ईश्वर में विश्वास एवं ईसा मसीह के द्वारा उद्धार करने एवं उनके द्वारा ही मोक्ष करने पर जोर देता है। इसी प्रकार इस्लाम भी पैगंबर मुहम्मद साहब की शिक्षाओं पर आधारित है, जो कि एक ईश्वर (अल्लाह) में विश्वास एवं कुरान का पालन करने पर जोर देता है।

भारत में उत्पन्न विभिन्न धर्मों एवं मत पंथों में ईश्वर की अवधारणा विविध है, परंतु सेमेटिक धर्मों में केवल एक ईश्वर में ही विश्वास किया जाता है। भारतीय मत पंथों में कर्मकांड का महत्व कम है, जबकि सेमेटिक धर्मों में कर्मकांड की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। भारतीय मत पंथों में मोक्ष की प्राप्ति के विभिन्न मार्ग उपलब्ध हैं जिन पर चलकर मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है परंतु सेमेटिक धर्मों में मोक्ष की प्राप्ति केवल ईश्वर की कृपा से ही सम्भव है। भारतीय मत पंथों में विविध सामाजिक संरचना रहती है जबकि सेमेटिक धर्मों में एक समान सामाजिक संरचना रहती है एवं इसमें विविधता का अभाव है। भारत में उत्पन्न धर्मों एवं मत पंथों में तथा सेमेटिक धर्मों में सामाजिक संरचना एवं दर्शन भी अलग अलग है।

भारत के बारे में यह कहा जाता है कि यहां विविधता में भी एकता दिखाई देती है क्योंकि आज भारत में विभिन्न धार्मिक आस्थाओं एवं विभिन्न धर्मों की उपस्थिति तथा उनकी उत्पत्ति तो दिखाई ही देती है, साथ ही, व्यापारियों, यात्रियों, आप्रवासियों, एवं यहां तक कि आक्रमणकारियों द्वारा भी यहां लाए गए धर्मों को आत्मसात करते हुए उनका सामाजिक एकीकरण दिखाई देता है। सभी धर्मों के प्रति हिन्दू धर्म के आतिथ्य भाव के विषय में जॉन हार्डन लिखते हैं, हालांकि, वर्तमान हिन्दू धर्म की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसके द्वारा एक ऐसे गैर–हिन्दू राज्य की स्थापना करना है जहां सभी धर्म समान हैंज्ज्.। पूरे विश्व में संभवत्ः केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहां धार्मिक विविधता एवं धार्मिक सहिष्णुता को समाज द्वारा मान्यता प्रदान की जाती है।

भारत-पाकिस्तान युद्ध में कितने चेहरे बेनकाब

बीते हफ्ते भारत–पाकिस्तान के बीच 4 दिन छिटपुट लड़ाई चली। इस दौरान जहां भारत ने अपने पड़ोसी के साथ संबंध की नई इबारत लिख दी, तो वहीं चीन का तिलिस्म फूट गया और अमरीका की दोहरी नीति फिर बेनकाब हो गई। इस बीच देश का एक हिस्सा इस बात से नाराज है कि युद्ध में हावी भारत ने पाकिस्तान के साथ संघर्ष विराम क्यों स्वीकार किया। 'ऑप्रेशन सिंदूर' की कामयाबी को समझने का सही तरीका यह है कि भारत ने इस सैन्य अभियान में क्या मकसद तय किए थे और उन्हें कितना अच्छे से अंजाम दिया।

भारत और पाकिस्तान के संबंध अब पुराने ढर्रे पर नहीं, बल्कि नई शर्तों पर तय होंगे। पाकिस्तान की शह पर होने वाला कोई भी आतंकी हमला अब सीधे युद्ध की घोषणा माना जाएगा और भारत उसकी जवाबी कार्रवाई बिना देर किए करेगा। 12 मई को प्रधानमंत्री मोदी के राष्ट्र के नाम संबोधन में यह साफ हुआ। 2008 के मुंबई हमलों में भारत सिर्फ 'कड़ी निंदा' करने तक सिमटा हुआ था लेकिन 2016 और 2019 की सर्जिकल स्ट्राइक के बाद डंके की चोट पर भारत ने पाकिस्तान के भीतर जाकर जवाब दिया था। मारे गए आतंकियों में मसूद अजहर के रिश्तेदार यूसुफ अजहर, मुदस्सिर अहमद और अब्दुल मलिक सहित कई पुराने जिहादी शामिल थे, जिनका नाम 9–11 और लंदन हमले जैसी अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं से भी जुड़ा रहा था। पाकिस्तान का आतंकियों के साथ गठजोड़ खुलकर सामने आ गया। मारे गए जिहादियों को पाकिस्तानी झंडे में लपेटा गया, नमाजे–जनाजा में पाकिस्तानी फौज, पुलिस और नेता शामिल हुए। अमरीका द्वारा घोषित आतंकवादी हाफिज अब्दुल रऊफ के साथ पाकिस्तान के शीर्ष सैन्य अधिकारी जनाजे का नेतृत्व कर रहे थे, जो ओसामा बिन लादेन प्रकरण के बाद फिर साबित करता है कि पाकिस्तान में आतंकवाद राजकीय नीति का हिस्सा है।

रिश्वत लेकर सवाल पूछने का नेताओं काला इतिहास रहा है

देश के नेताओं ने आजादी के बाद से भ्रष्टाचार के इतने काले कारनामे किए हैं कि यदि कोई नेता ईमानदारी से अच्छा भी काम करे तब भी उस पर सहज भरोसा करना मुश्किल होता है। देश के लोगों की याद से नेताओ के काले कारनामे की छाप मिटे, इससे पहले ही कोई न कोई नया कांड ऐसा सामने आता है और पूरे तंत्र की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो जाते हैं। नया मामला राजस्थान का है। भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) के एक विधायक जयकृष्ण पटेल को राजस्थान भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने विधानसभा में सवाल पूछने के बदले 20 लाख रुपए की रिश्वत लेने के आरोप में रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। राजस्थान की इस क्षेत्रीय पार्टी के दो विधायक और एक सांसद हैं। आदिवासियों के उत्थान के आहवान के साथ इस पार्टी का गठन किया गया। इस पार्टी ने 2023 के विधानसभा चुनाव मे कुल चार सीटें जीती, तीन सीटें राजस्थान मे और एक सीट मध्यप्रदेश मे जीती। बीएपी की टिकट पर डूंगरपुर बांसवाड़ा संसदीय सीट जीतने वाले राजकुमार रोत लोकसभा से सांसद बने। रिश्वत लेने के आरोपी बीएपी विधायक पटेल ने विधानसभा में बीते सत्र के दौरान 11 जुलाई 2024 को अवैध खनन, फार्म हाउस, वन्य जीव और नशा तस्करी को लेकर सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कुछ सवाल किये गए थे। विधानसभा में इन्हीं खनन से जुड़े सवालों को हटवाने को लेकर रिश्वत का खेल शुरु हुआ। बीएपी विधायक ने इन सवालों को हटाने के लिए 10 करोड़ की डिमांड की थी। अंतत्ः 20 लाख में सौदा तय हुआ और विधायक पटेल को रंगे हाथों दबोच लिया गया। यह पहला मौका नहीं है जब किसी जनप्रतिनिधि ने सदन की पवित्रता को तार–तार किया है। इससे पहले भी मामले सामने आ चुके हैं, जब विधानसभा हो या लोकसभा में सवाल पूछने या नहीं पूछने के ऐवज में रिश्वत मांग कर समूचे लोकतंत्र को कलंकित करने का काम किया गया है।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस पार्टी (टीएमसी) की सांसद महुआ मोइत्रा का मामला अभी भी देश के लोगों की स्मृति से मिटा भी नहीं है। महुआ मोइत्रा ने रियल एस्टेट कारोबारी दर्शन हीरानंदानी के व्यवसायिक हितों की रक्षा के लिए संसद में सवाल पूछे। आरोप था कि महुआ मोइत्रा ने हीरानंदानी के इशारे पर 61 सवालों में 50 में अंबानी और अडानी को टारगेट किया। दर्शन हीरानंदानी ने खुलासा किया कि महुआ मोइत्रा ने अपनी संसद लॉगिन और पासवर्ड उनके साथ साझा किया था। उन्होंने महुआ की ओर से सवाल पोस्ट किए थे। एथिक्स कमेटी ने 6–4 के बहुमत से महुआ मोइत्रा की संसद सदस्यता खत्म करने की सिफारिश कर दी। टीएमसी सांसद मोइत्रा से पहले भी जनप्रतिनिधियों के ऐसे कृत्यों से देश में राजनीतिक बवंडर उठ चुके हैं। वर्ष 2005 में ऐसे ही एक अन्य मामले में लोकसभा के 10 और राज्यसभा के एक सांसद की सदस्यता रद्द हुई थी। तब एक वेब पोर्टल ने स्टिंग ऑपरेशन किया था। स्टिंग में 11 सांसद सवाल के बदले में कैश का ऑफर स्वीकार करते दिखे थे। इनमें लोकसभा के 10 और राज्यसभा के 1 सदस्य को निष्कासित कर दिया गया था। तब केंद्र में डॉक्टर मनमोहन सिंह के नेतृत्व में यूपीए–1 की सरकार थी। संसद की सदस्यता गंवाने वालों में 6 बीजेपी के थे, 3 बीएसपी के और 1–1 कांग्रेस के सांसद थे। स्टिंग में सबसे कम कैश 15000 रुपये की भाजपा सांसद छत्रपाल सिंह लोढ़ा के सामने पेशकश की गई थी जबकि सबसे ज्यादा कैश 1,10,000 रुपये आरजेडी के सांसद मनोज कुमार को ऑफर की गई थी।

24 दिसंबर 2005 को संसद में वोटिंग के जरिए आरोपी सभी 11 सांसदों को निष्कासित कर दिया गया। लोकसभा में प्रणब मुखर्जी ने 10 सांसदों के निष्कासन का प्रस्ताव रखा था जबकि राज्यसभा में तत्कालीन पीएम मनमोहन सिंह ने एक सांसद को निष्कासित करने का प्रस्ताव रखा था। वोटिंग के दौरान भाजपा वॉकआउट कर गई थी। पार्टी के वरिष्ठ नेता और तत्कालीन नेता प्रतिपक्ष एलके आडवाणी ने कहा था कि सांसदों ने जो कुछ किया वह करप्शन कम, मूर्खता ज्यादा है। इसके लिए निष्कासन बहुत ही कठोर सजा होगी। जनवरी 2007 में सुप्रीम कोर्ट ने भी सांसदों के निष्कासन के फैसले को सही ठहराया था। उसी साल दिल्ली हाई कोर्ट के निर्देश में दिल्ली पुलिस ने इस मामले में केस भी दर्ज किया था। न्यूज पोर्टल के दो पत्रकारों के खिलाफ भी चार्जशीट दाखिल हुई। संसद राज्यसभा हो या लोकसभा, सदन में सत्र की कार्यवाही के दौरान असहज कर देने वाली घटनाओं का पुराना इतिहास रहा है। पहले भी ऐसी कई घटनाओं का गवाह बना है चाहे वो पैसे के लेन–देन को लेकर आरोप लगाने का मामला हो या फिर नोटों की गड्डियां लहराने का। ऐसे कई किस्से हैं जब सदन की गरिमा को तार–तार किया गया। 22 जुलाई, 2008 को मनमोहन सरकार के विश्वासमत हासिल किए जाने के दौरान लोकसभा में एक करोड़ रुपए के नोटों की गड्डियां लहरा कर सनसनी फैला दी गई थी। नोट लहराने वालों में भाजपा के तीन सांसदों अशोक अर्गल, महावीर भागौरा और फग्गन सिंह कुलस्ते शामिल थे। तीनों सांसदों ने आरोप लगाया था कि समाजवादी पार्टी के तत्कालीन महासचिव अमर सिंह और कांग्रेस अध्यक्ष के राजनीतिक सचिव अहमद पटेल ने विश्वास मत में हिस्सा नहीं लेने के बदले रुपए देने की पेशकश की थी। जबकि इन दोनों ने इन आरोपों से इनकार किया था। इसी तरह राज्यसभा में 5 दिसंबर 2024 को कांग्रेस सांसद की बेंच से नोटों के बंडल मिलने का मामला सामने आया। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने इसे गंभीर मामला बताया। साथ ही इसकी जांच कराने की बात कही है। यह सीट तेलंगाना से सांसद अभिषेक मनु सिंघवी की थी। देश के लोकतंत्र पर कालिख पोतने वाली ऐसी घटनाओं से जाहिर है कि कानून बना कर देश चलाने वाले जनप्रतिनिधियो पर आम लोगों का पूरा भरोसा नहीं है। इस भरोसे के दरकने के लिए नेता जिम्मेदार हैं। दरअसल नेता और जनप्रतिनिधी जब तक खुद को कानून से ऊपर समझते रहेंगे तब तक ऐसी शर्मनाक पुनरावृत्ति से देश शर्मसार होता रहेगा।

प्रधानमंत्री जनमन योजना, आवास ग्रामीण और मनरेगा कार्यों का सतत निरीक्षण

क्षेत्र भ्रमण के बाद शिविर में आमजन से संवाद

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। सुशासन तिहार के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र में आम नागरिकों की मांग और शिकायतों को गुणवत्तापूर्ण तरीके से निराकृत करने के लिए एमसीबी जिले में एक नई पहल की जा रही है। यहां कलेक्टर श्री डी राहुल वेंकट के निर्देश पर जिला पंचायत सीईओ श्रीमती अंकिता सोम शर्मा निरंतर भ्रमण कर जनसंवाद कर रही हैं। इस नई कार्यप्रणाली से पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की महत्वपूर्ण योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन में नई गति देखी जा रही है। जिला पंचायत एमसीबी की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती अंकिता सोम ने जनकपुर जनपद पंचायत में कंजिया शिविर के पूर्व उस क्लस्टर में आने वाले समस्त ग्राम पंचायतों में सबेरे से ही भ्रमण कर विभागीय योजनाओं की प्रगति का आकलन किया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए। यहां उन्होंने ग्राम कंजिया एवं घटई का भ्रमण कर योजना की प्रगति देखी और ग्रामीण परिवारों में बैगा हितग्राहियों रामनारायण बैगा, अनुसुइया पति प्रेमलाल एवं अन्य से संवाद कर उन्हें प्रोत्साहित किया। इसी तरह नागपुर शिविर के पूर्व उन्होंने ग्राम पंचायत नागपुर पहुंचकर प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राही श्रीमती सुनीता, पति प्रेमलाल एवं लक्ष्मण प्रसाद, पिता जयकरण एवं अन्य हितग्राहियों से बातचीत कर उनके नए आवास निर्माण कार्य की जानकारी प्राप्त की सभी आवास प्लिंथ लेवल पर हैं। हितग्राहियों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने किसी भी तरह से संसाधन जुटाने में दिक्कत आने पर ग्राम पंचायत में सचिव, तकनीकी सहायक से तुरंत संपर्क करने के निर्देश दिए। जिला पंचायत सीईओ श्रीमती अंकिता सोम अपने भ्रमण के दौरान प्रधानमंत्री जन मन योजना के अंतर्गत पात्र हितग्राहियों के शत प्रतिशत पंजीयन की जानकारी लेने के अलावा आवास योजना ग्रामीण में हितग्राही से सीधे संवाद कर निर्माण कार्य आरंभ करने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। इसके अलावा वह महात्मा गांधी नरेगा योजना में हो रहे कार्यों का अवलोकन कर गुणवत्ता पूर्ण निर्माण कार्यों को समय सीमा में क्रियान्वित करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान कर रही हैं। श्रीमती अंकिता सोम जिला पंचायत सीईओ ने बताया कि जिले में कलेक्टर श्री डी राहुल वेंकट के निर्देश पर क्षेत्र का निरंतर भ्रमण जारी है। सुशासन तिहार में शिविर के पूर्व उस क्षेत्र में वंचित वर्ग परिवारों को आवास योजना ग्रामीण के लाभ की जानकारी ली जा रही है।

पीएम जनमन योजना में नए पंजीयन और हितग्राहियों के शत प्रतिशत आधार सीडिंग पर समीक्षा करते हुए अब तक स्वीकृत अपूर्ण आवासों को पूर्ण करने पर ध्यान दिया जा रहा है। साथ ही जल संरक्षण हेतु जन जागरूकता अभियान में आम नागरिकों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। जल संरक्षण एवं संवर्धन के कार्यों की आवश्यकताओं का आंकलन एवं क्रियान्वयन करते हुए मनरेगा कार्यों का भी अवलोकन किया जा रहा है। साथ ही वनांचल क्षेत्र भरतपुर में अन्य विभागीय गतिविधियों के सतत् क्रियान्वयन हेतु लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

सतना की खबरें

राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी ने सुनी आमजनों की समस्यायें

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने शनिवार को विधानसभा क्षेत्र कार्यालय में आयोजित जनता दरबार में जिले की आम जनता एवं अन्य गणमान्य नागरिक द्वारा प्रस्तुत की गई समस्याओं से रूबरू हुईं। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी द्वारा समस्याओं का निराकरण विभिन्न विभाग से आये अधिकारियों द्वारा कराया गया और जिन समस्याओं का निराकरण शासन स्तर पर किया जाना है उसके लिये प्रतिवेदन तैयार करने के निर्देश दिये गए।

पानी बचाने के संदेश को लेकर दीवार लेखन पहुंचा रहा गांव-गांव

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत चलाए जा रहे मां मंदाकिनी पुनर्जीवन जागरूकता अभियान के छठवें दिवस मंदाकिनी नदी के तटीय ग्रामों तथा चित्रकूट नगर परिषद के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों में दीवार लेखन का कार्य किया गया। दीनदयाल शोध संस्थान एवं मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के संयुक्त समन्वय के आधार पर 11 मई से प्रारंभ किये गए मां मंदाकिनी नदी पुनर्जीवन जागरुकता अभियान के तहत नवांकुर समितियां द्वारा आमजन के बीच जल के संरक्षण एवं संवर्धन की जागरूकता के लिए विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर दीवार लेखन के माध्यम से संदेश लिखे जा रहे हैं। जिससे आम जनता इन संदेशों को पढकर जल के बचत के लिए जागरूक हो सके। नदी पुनर्जीवन हेतु जनभागीदारी बढाने के उद्देश्य से जल स्रोतों की सुरक्षा संबंधी नारों को जन जन तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। इस संबंध में जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक डॉ. राजेश तिवारी द्वारा बताया गया कि इस अभियान के तहत नवांकुर संस्थाओं के सहयोग से ग्रामीण जन के साथ मिलकर विभिन्न तटीय ग्रामों में जन संवाद के माध्यम से ग्रामीणों को नदी पुनर्जीवन के विभिन्न विषयों से जोडा जा सका। साथ ही रैली नुक्कड़ नाटक और दीवार लेखन, मेहदी और पेंटिंग प्रतियोगिता जल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषय को आमजन तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम बन रही है।

ग्रामीण जल चौपाल में सीख रहे पानी प्रबंधन के सूत्र

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिला प्रशासन और कलेक्टर सतीश कुमार एस के दिशा निर्देशन में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के वालंटियर गांव-गांव पहुंचकर जल चौपाल के माध्यम से ग्रामीणों के साथ चर्चा करते हुए उन्हें विभिन्न तकनीकों से अवगत करा रहे हैं। मझगवां जनपद के बिरसिंहपुर ग्राम पंचायत में आयोजित जल चौपाल पर मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक डॉ. राजेश तिवारी, कृष्ण बिहारी मंदिर के महंत संतोष दास जी महाराज तथा नवांकुर संस्था के अध्यक्ष रामकृष्ण नामदेव उपस्थित रहे। जल चौपाल को संबोधित करते हुए डॉ. तिवारी ने बताया कि पानी बनाया नहीं जा सकता। केवल उचित प्रबंधन से हम पानी को पीने योग्य एवं अपने उपयोग हेतु प्राप्त कर सकते हैं। प्रतिवर्ष जितनी वर्षा होती है हमें केवल उसके तीन प्रतिशत जल की आवश्यकता संपूर्ण निस्तार हेतु होती है। परंतु वर्षा के जल का उचित प्रबंध न हो पाने के कारण वर्षा जल जमीन के रास्ते समुद्र में चला जाता है। ग्रीष्मकाल आने पर हमें जल संकट का सामना करना पड़ता है, अब आवश्यकता है कि समाज मिलकर पानी का उचित प्रबंध करें। हम घर का पानी घर में एवं गांव का पानी गांव में रोक कर सतही जल स्तर को बढ़ा सकते हैं, जिससे हमें वर्ष भर पानी की उपलब्धता रहेगी और तथा कृषि कार्य में पानी की कमी नहीं होगी। अतः पूरा समुदाय एक साथ जागृत होकर पानी बचाने और पानी रोकने दोनों तरीकों पर कार्य करते हुए गांव-गांव में सोखता गड्ढे, बोरी बंधान, पहाड़ों में स्ट्रैंचेज, मेढ़ बंधान आदि की व्यवस्था करनी होगी। बरसात में हम अधिक से अधिक पानी को अपने गांव में रोक कर जल स्रोतों के उचित रखरखाव से अपने गांव के पानी को उपयोगी बना सकते है। हम सभी का यह प्रयास होना चाहिए की चौमासा में जल स्रोतों के किनारे अधिक से अधिक पौधे लगाए। जिससे उनकी जड़ों के माध्यम से सभी जल स्रोतों को 12 महीने पानी उपलब्ध रहे। बूंद बूंद से घड़ा भरता है तो निश्चित रूप से सभी की सहभागिता से जल गंगा संवर्धन अभियान का लक्ष्य अवश्य पूरा होगा और हम सभी के जीवन में जल संकट दूर होगा। चौपाल के अंत में नवांकुर संस्था के अध्यक्ष रामकृष्ण नामदेव द्वारा सभी उपस्थित ग्रामीणों को जल स्रोतों के संरक्षण एवं संवर्धन की सामूहिक शपथ दिलाई गई।

सैनिकों के सम्मान में उल्लास के साथ निकली तिरंगा यात्रा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। आपरेशन सिंदूर की सफलता पर देश के वीर सैनिकों के सम्मान में सतना शहर में जनप्रतिनिधियों की विशेष उपस्थिति में शहर के गणमान्य नागरिकों ने सिटी कोतवाली के पीछे रामना टोला से विशाल तिरंगा यात्रा का आयोजन किया। तिरंगा यात्रा में नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, सांसद गणेश सिंह, महापौर योगेश ताम्रकार, स्पीकर राजेश चतुर्वेदी, पूर्व विधायक शंकरलाल तिवारी, जिलाध्यक्ष भगवती प्रसाद पाण्डेय, भूतपूर्व सैनिकों सहित हर आयु वर्ग के लोगों की भागीदारी रही। यात्रा में हर धर्म, हर जाति और हर वर्ग के लोग इस यात्रा में शामिल हुये और उन्होंने अपने राष्ट्रप्रेम की झलक बिखरते हुए सेना के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। इस यात्रा के माध्यम से पूरा शहर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हो गया और पूरा आसमान भारत माता की जय तथा वंदेमातरम् के उदघोष से गुंजायमान रहा। यात्रा का समापन शहर भ्रमण के उपरांत जय स्तम्भ चौक में किया गया।

3 सदस्यीय जांच कमेटी करेगी ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के कार्यो की जांच

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ने ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के विभिन्न योजनाओं के तहत स्वीकृत कार्यों की जांच के लिए 3 सदस्यीय जांच समिति की गठन किया है। इस समिति में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, कार्यपालन यंत्री जल संसाधन विभाग तथा जिला कोषालय अधिकारी को शामिल किया गया है। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर द्वारा 16 मई को ग्रामीण क्षेत्र के भ्रमण के दौरान किये गये निरीक्षण में ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के स्वीकृत कार्यों में नाला ट्रेंचिंग, नाला/स्टाप डैम की मिट्टी हटाना, गहरीकरण करना, तालाब का गहरीकरण, खोदाई कार्य में प्रथम दृष्टया अनियमितता पाई गई थी। कलेक्टर ने जांच समिति को ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के विभिन्न योजनाओं के तहत स्वीकृत कार्यों का भौतिक, वित्तीय एवं तकनीकी मापदण्डों पर निरीक्षण करते हुए एक सप्ताह में जांच प्रतिवेदन मय साक्ष्य सहित प्रस्तुत करने के निर्देश दिये हैं।

युवती बोली-कांग्रेस नेता ने शादी का झांसा देकर दुष्कर्म किया

10 साल रिलेशन में रहा, प्रेग्नेंट हुई तो एबॉर्शन करवाया, दूसरे से कर रहा शादी

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग (निप्र)। दुर्ग जिले में शादी का झांसा देकर युवती से रेप का मामला सामने आया है। आरोपी युवा कांग्रेस का पूर्व प्रदेश महासचिव है। 10 साल तक रिलेशन में रहने के बाद आरोपी ने युवती से शादी से इनकार कर दिया। रिलेशनशिप के दौरान युवती गर्भवती हुई तो आरोपी ने एबॉर्शन भी करवाया।

पीड़िता ने युवक के खिलाफ पद्मनाभपुर थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया है।

एएसपी पद्मश्री तंवर ने बताया कि एक युवती ने पद्मनाभपुर थाने में शारीरिक शोषण का मामला दर्ज कराया है। लड़की ने आरोप लगाया है कि साल 2015 में उसकी मुलाकात भिलाई निवासी मो. आमिर सिद्दकी (35 साल) से हुई थी।

दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ी। आमिर ने लड़की को शादी का वादा किया, लेकिन लड़की के घरवालों को ये रिश्ता मंजूर नहीं था। इसके बाद भी आमिर और लड़की साल 2015 से 2025 तक एक साथ रहे। दोनों के बीच मिलना-जुलना होता रहा।

इस दौरान आमिर ने समय-समय पर लड़की के साथ शारीरिक संबंध बनाए। लड़की के गर्भवती होने पर उसने उसे शादी करने का झूठा वादा किया और एबॉर्शन करा दिया। कुछ दिन पहले लड़की को पता चला कि, आमिर का किसी दूसरी लड़की से निकाह होने वाला है, इस पर उसने उससे झगड़ा किया और शादी के लिए दबाव बनाया।

जब लड़की शादी की जिद पर अड़ गई तो आमिर ने लड़की से शादी करने से ही मना कर दिया। इसके बाद लड़की ने पद्मनाभपुर थाने में जाकर मामले की शिकायत दर्ज कराई।

मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपी को पुलिस ने कोर्ट में बिफोर टाइम पेश किया। इस मामले की सुनवाई के लिए दुर्ग जिला न्यायालय की संबंधित कोर्ट को समय से पहले खोला गया। वहां पुलिस ने आरोपी को पेश किया। न्यायालय ने आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

भिलाई में ज्योति बनकर रह रही थी बांग्लादेश की शाहिदा, पति ने कई इंडस्ट्रीज में काम किया

दोनों का वीजा एक्सपायर, फर्जी आधार, पैन-कार्ड बनवाया

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग (निप्र)। दुर्ग पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स जिले में पहचान छिपाकर अवैध रूप से रह रहे घुसपैठियों की तलाश कर रही है। स्पेशल टास्क फोर्स ने 4 दिन के भीतर दूसरी कार्रवाई करते हुए बांग्लादेशी दंपती को गिरफ्तार किया है। भिलाई में पत्नी घरेलू काम करती थी और पति इंडस्ट्रीज में काम करता था।

स्पेशल टास्क फोर्स प्रभारी सत्य प्रकाश तिवारी के अनुसार उन्हें जानकारी मिली कि सुपेला के कांट्रैक्टर कॉलोनी में एक महिला और पुरुष अवैध तरीके से पहचान छिपाकर रह रहे हैं। दोनों बांग्लादेश के निवासी हैं और भारत जिस वीजा पासपोर्ट से आए थे, वो एक्सपायर हो गया है।

पुलिस ने दोनों को हिरासत में लिया। जब उनके दस्तावेजों की जांच कर उनसे पूछताछ की गई तो महिला ने अपना नाम ज्योति बताया और उसके पति ने अपना नाम रासेल शेख बताया। जब पुलिस ने बारीकी से जांच की तो पता चला कि महिला का असली नाम शाहिदा खातून (35 साल) है। वो यहां अपना नाम (ज्योति) बदलकर भिलाई में किराए के मकान में रह रही है।

पुलिस ने जांच में पाया कि ज्योति ने रासेल शेख से 2017 में शादी की। इसके बाद दोनों ने पासपोर्ट और वीजा के आधार पर भारत में प्रवेश किया। इस दौरान ज्योति का वीजा 13-09-2018 को और रासेल का वीजा 12 अप्रैल 2020 को समाप्त हो गया था। इसके बाद भी दोनों यहां अवैध तरीके से रह रहे थे।

पुलिस ने जांच में पाया कि भिलाई में रहते हुए ज्योति ने फर्जी दस्तावेज के आधार पर अपना आधार कार्ड, पैन कार्ड, मतदाता परिचय पत्र और पासपोर्ट बना लिया था। इसके बाद वे यहां रहकर इंटरनेट कॉल और वॉट्सएप के जरिए बांग्लादेश में अपने परिजनों से संपर्क में थे।

एसपी विजय अग्रवाल ने बताया कि शाहिदा खातून इससे पहले साल 2009 में भारत आ चुकी थी। उसने भारत बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय बोंगा बॉर्डर को अवैध तरीके से पारकर नॉर्थ 24 परगना पश्चिम बंगाल में प्रवेश किया था। इसके बाद वो हावड़ा होते हुए मुंबई पहुंची और वहां मेहनत मजदूरी करने लगी। यहां उसकी पहचान बांग्लादेश निवासी मो. रासेल से हुई।

दोनों मुंबई से वापस पश्चिम बंगाल आ गए। यहां शाहिदा ने अपना नाम बदलकर ज्योति रख लिया। इसके बाद वहां उन दोनों ने शादी कर लिया। फिर दोनों कुछ दिन तक वहां रहने के बाद बांग्लादेश चले गए। वहां से फिर साल 2017 में भारतीय वीजा पासपोर्ट के आधार पर भारत आए और फिर वापस ही नहीं गए।

जानकारी के मुताबिक रासेल दिल्ली में लूट के मामले में आरोपी रह चुका है। पुलिस इसकी भी जांच कर रही है।

स्पेशल टास्क फोर्स ने इससे पहले बुधवार को अवैध तरीके से रह रही बांग्लादेशी महिला को गिरफ्तार किया है। पिछले 2 साल से वह पहचान छिपाकर किराए के घर पर रह रही थी। पुलिस वेरिफिकेशन नहीं कराने पर मकान मालिक को भी पकड़ा गया है। जांच में महिला का आधार कार्ड और नाम फर्जी पाया गया।

सुशासन तिहार समाधान शिविर का आयोजन,दिव्यांगजनों को मिला सहारा

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। ग्राम पंचायत नागपुर में 16 मई 2025 को सुशासन तिहार समाधान शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं को जरूरतमंदों तक सीधे पहुंचाना था। विशेष रूप से दिव्यांगजनों के लिए यह शिविर सहायक सिद्ध हुआ। समाज कल्याण विभाग मनेन्द्रगढ़ द्वारा पूर्व में प्राप्त आवेदनों की जांच कर पात्र पाए गए दिव्यांगजनों को आवश्यक सहायक उपकरण वितरित किए गए। शिविर में कुल 7 दिव्यांगजनों को मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल, 1 दिव्यांगजन को व्हीलचेयर, तथा 5 दिव्यांगजनों को छड़ी प्रदान की गई, जिससे उनके दैनिक जीवन में सहूलियत हो सके। इस वितरण कार्यक्रम में जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री राजेश साहू, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती जानकी बाई खुसरो, जिला अध्यक्ष श्रीमती चंपा देवी पावले, जनपद सदस्य श्रीमती रीना अग्रवाल, अनुविभागीय अधिकारी श्री लिंगराज सिदार, जनपद सीईओ सुश्री वैशाली सिंह, तहसीलदार सुश्री उमंग जैन, सहित अनेक जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। शिविर का उद्देश्य सुशासन के तहत जरूरतमंदों तक सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे पहुंचाना था। इस अवसर पर जनसमुदाय ने इस आयोजन की सराहना की और शासन द्वारा चलाए जा रहे जनकल्याणकारी प्रयासों के प्रति आभार व्यक्त किया।

आचार्य विद्यासागर गौ संवर्धन योजना से डेयरी व्यवसाय का सुनहरा अवसर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पशुपालन विभाग द्वारा दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए आचार्य विद्यासागर गौ संवर्धन योजना लागू की गई है। इस योजना में 75 प्रतिशत राशि बैंक ऋण के माध्यम से दी जाती है। शेष 25 प्रतिशत राशि हितग्राही को अंशदान के रूप में देनी होती है। योजना में 7 वर्षों तक 5 प्रतिशत ब्याज की प्रतिपूर्ति अनुदान का भी लाभ दिया जाता है। इस संबंध में उप संचालक डॉ राजेश मिश्रा ने बताया कि योजना के लिए पशुपालक के पास कम से कम 5 पशु और एक एकड़ कृषि भूमि होना आवश्यक है। पशुओं की संख्या में वृद्धि होने पर उसी के अनुपात में कृषि भूमि का निर्धारण किया जाता है। योजना की एक इकाई में 5 भैंस होने पर 4 लाख 25 हजार रुपए तथा 5 शंकर नस्ल की गाय होने पर 3 लाख 82 हजार रुपए एवं देशी गाय होने पर 2 लाख 43 हजार 750 रुपए इकाई लागत निर्धारित की गई है। 10 दुधारू पशुओं के होने पर 10 भैंसों में 8 लाख 40 हजार, शंकर गाय के लिए 7 लाख 51 हजार रुपए तथा 10 देशी गाय के लिए 4 लाख 75 हजार रुपए इकाई लागत निर्धारित की गई है। इस योजना में सामान्य वर्ग के पशुपालक को परियोजना लागत का 25 प्रतिशत अधिकतम एक लाख 25 हजार रुपए मार्जिन मनी सहायता के रूप में दिया जाता है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के हितग्राही को परियोजना लागत का 33 प्रतिशत अधिकतम 2 लाख रुपए मार्जिन मनी के रूप में दिया जाता है। पशुपालन विभाग के माध्यम से प्रकरण बैंकों में भेजे जाते हैं।

बैंक से प्रकरण स्वीकृत होने के बाद हितग्राही को इकाई लागत की राशि प्रदान की जाती है। इस योजना में इकाई लागत की 75 प्रतिशत राशि पर बैंक की कुल ऋण राशि में 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज अनुदान दिया जाता है। इसकी राशि अधिकतम 25 हजार रुपए प्रतिवर्ष निर्धारित है। जिले में कई पशुपालक इस योजना से सफलतापूर्वक डेयरी इकाई संचालित कर रहे हैं।

उरी कश्मीर में कई जगह पुलिस के छापे

श्रीनगर/इस्लामाबाद (एजेंसी)। जम्मू–कश्मीर पुलिस की स्टेट इन्वेस्टिगेशन एजेंसी सेंट्रल और नॉर्थ कश्मीर के सोपोर, बारामुला, हंदवाड़ा, गांदरबल और श्रीनगर समेत कई इलाकों में छापेमारी कर रही है। यह कार्रवाई आतंक से जुड़े मामलों की जांच के सिलसिले में की जा रही है। सूत्रों के मुताबिक, शुक्रवार देर रात एजेंसी को संदिग्ध आतंकी मूवमेंट की जानकारी मिली थी, जिसके बाद यह कार्रवाई शुरू की गई। वहीं, सांबा जिले के एक गांव में टेरर एक्टिविटी दिखने के बाद सुरक्षा बलों की संयुक्त टीम ने सर्च ऑपरेशन शुरू किया है।

इधर, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने नूर खान एयरबेस पर भारतीय हमले की बात कुबूल कर ली है। उन्होंने कहा कि 10 मई की रात करीब 2:30 बजे जनरल आसिम मुनीर ने उन्हें सेफ लाइन पर फोन कर बताया कि भारत की बैलिस्टिक मिसाइलों ने नूर खान एयरबेस और कुछ अन्य इलाकों को निशाना बनाया है। शरीफ ने शुक्रवार रात दावा किया कि पाकिस्तान की वायुसेना ने देसी तकनीक और आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल कर देश को बचाया। चीन से मिले जेट्स का भी इस्तेमाल किया गया। पाकिस्तान के नूर खान एयरबेस की सैटेलाइट इमेज सामने आई थी भारत ने अफगानिस्तान के प्रति सद्भावना दर्शाते हुए अटारी–वाघा बॉर्डर के रास्ते अफगानी के ट्रकों को भारत में प्रवेश की अनुमति दी है। शुक्रवार को विशेष अनुमति के तहत 5 अफगानी ट्रक भारत में दाखिल हुए, जिनमें से 4 ट्रकों में ड्राई

फ्रूट्स और एक ट्रक में मुलट्ठी लदी हुई थी। जम्मू–कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कुपवाड़ा में सशस्त्र बलों के जवानों से मुलाकात की और उनका हौसला बढ़ाया। जम्मू–कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि यहां कई घर और दुकानों को नुकसान पहुंचा है। मैंने खुद मौके पर जाकर हालात देखे और लोगों से बात की। उन्होंने बताया कि प्रशासन ने अपनी रिपोर्ट के आधार पर तत्काल राहत दी है, लेकिन कुछ लोग अभी भी पुनर्वास से वंचित हैं। सिन्हा ने कहा कि यह सहायता अभी पर्याप्त नहीं है, इसलिए एक विस्तृत योजना बनाई जाएगी और भारत सरकार से मदद मांगी जाएगी ताकि सभी प्रभावित लोगों को पूरी तरह राहत दी जा सके।

तुर्किये के खिलाफ भारत में बायकॉट अभियान तेज

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान को सपोर्ट करने के कारण तुर्किये का भारत में बायकॉट हो रहा है। न केवल ट्रैवल कैंसिलेशन बढ़े हैं, बल्कि सेब और मार्बल सहित तुर्किये से इंपोर्ट किए जाने वाले हर सामान का बायकॉट किया जा रहा है। 16 मई को कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स ने तुर्किये और अजरबैजान के साथ व्यापार खत्म करने की घोषणा की। दिल्ली में हुई मीटिंग में देश के 24 राज्यों से बिजनेस लीडर्स ने भाग लिया। सीएआईटी ने गुरुवार को कहा था कि जो देश भारत के खिलाफ हैं उसके साथ व्यापार करने का कोई सवाल ही नहीं है। 22 अप्रैल को पहलगाम हमले के बाद भारत–पाक तनाव बढ़ा, तो तुर्किये–अजरबैजान ने खुलकर पाकिस्तान का समर्थन किया और भारत के खिलाफ इस्तेमाल के लिए पाकिस्तान को ड्रोन्स–हथियार और इन्हें चलाने वाले ट्रेंड लोग भी भेजे। इसके बाद देशभर में बायकॉट तुर्किये और बायकॉट अजरबैजान शुरू हो गया है। भारत के ऑनलाइन ट्रैवल प्लेटफॉर्म जैसे कि ईजमाईट्रिप और इक्सिगो ने सुरक्षा जोखिम और राजनीतिक तनाव का हवाला देते हुए तुर्किये और अजरबैजान की यात्रा न करने की एडवाइजरी जारी की है।

भेड़ चराते समय 20 फीट दूर गिरी मिसाइल

फलोदी (एजेंसी)। 'मैं खेत में भेड़ों को चरा रहा था। इन्हें पानी पिलाकर आगे बढ़ ही रहा था, तभी महज 20 फीट की दूरी पर आसमान से मिसाइल आकर गिरी। बहुत तेज धमाका हुआ। मैं भागकर पेड़ के पीछे छिपा और आंख–कान बंद कर लिए। धमाका इतना तेजा था कि मैं अंदर तक कांप गया। धमाके से सहमी मेरी भेड़ें भी भागी और खेत में लगी जालियों में जाकर टकरा गई। कुछ देर बाद आंखों के आगे से अंधेरा छंटा तो परिवार व रिश्तेदारों को फोन कर सारी बात बताई।' प्रयागसिंह ने अपनी आंखों से पाकिस्तान से आई मिसाइलों को ध्वस्त होते देखा था, जिनसे फलोदी एयरबेस को निशाना बनाया गया था। 10 मई की सुबह एक–एक कर 4 मिसाइलों के धमाके फलोदी के 3 गांवों में सुने गए थे। फलोदी के बिठड़ी में भारतीय वायु सेना का एयरबेस स्टेशन है। यह सेंसिटिव जगहों में से एक है। जिन जगहों पर धमाके हुए वो एयरबेस स्टेशन से लगभग 15 से 20 किलोमीटर की दूरी पर ही हैं।

प्रयाग सिंह ने बताया कि वे नियमित भेड़–बकरियों का रेवड़ (भेड़ों के झुंड) लेकर हमेशा की तरह सुबह निकलते हैं।

केदारनाथ में एयर एंबुलेंस हेलिकॉप्टर क्रैश

रुद्रपुर (एजेंसी)। उत्तराखंड के केदारनाथ में शनिवार को एयर एंबुलेंस हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया। हेलिकॉप्टर में तीन लोग सवार थे– पायलट, डॉक्टर और नर्स। तीनों सुरक्षित हैं। बताया जा रहा कि हेलिकॉप्टर ऋषिकेश एम्स से मरीज लेने केदारनाथ आ रहा था। लैंडिंग से वक्त अचानक बेकाबू होकर जमीन पर गिर गया। हादसा हेलिकॉप्टर का टेल बान टूटने से हुआ। एम्स के संदीप कुमार ने बताया– संजीवनी एयर एंबुलेंस हेलिकॉप्टर एक मरीज को लेने के लिए केदारनाथ गया था। मरीज को एयर एंबुलेंस से रेस्क्यू कर अस्पताल पहुंचाया जाना था, लेकिन हेलीपैड से कुछ दूर पहले ही हेलिकॉप्टर में कोई दिक्कत आने की वजह से उसकी इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। वहीं, रुद्रप्रयाग के जिला पर्यटन अधिकारी राहुल चौबे ने बताया– पायलट की सूझबूझ से बड़ा हादसा टल गया। लैंडिंग के दौरान एयर एंबुलेंस के पीछे का हिस्सा टूट गया था, जिस वजह से वह

अचानक नीचे गिर गया। उत्तराखंड के उत्तरकाशी में 8 मई को हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया। हादसे में पायलट समेत 6 लोगों की मौत हो गई थी। मृतकों में बरेली की रहने वाली मां–बेटी भी हैं।

नेपाल के रास्ते बिहार में घुसने की फिराक में आतंकी

किशनगंज/सुपौल (एजेंसी)। भारत–पाक तनाव के बीच खुफिया विभाग की ओर से आतंकी घुसपैठ का अलर्ट जारी किया गया है। नेपाल के रास्ते बिहार में आतंकी घुसपैठ की कोशिश में हैं। इसकी सूचना मिलते ही भारत–नेपाल सीमा पर सुरक्षा बढ़ी दी गई है। खुफिया एजेंसियों के अनुसार, बांग्लादेश और पाकिस्तान से जुड़े 10 से ज्यादा आतंकी किशनगंज के ठाकुरगंज के रास्ते बिहार में घुसने की फिराक में हैं। यह संदिग्ध आतंकी ग्रुप बांग्लादेश के जमात–उल–मुजाहिदीन, हरकत–उल जिहाद अल–इस्लामी और बांग्लादेश जमात–ए–इस्लामी जैसे कट्टरपंथी संगठनों से जुड़े बताए जा रहे हैं। इस अलर्ट के बाद बिहार के सीमावर्ती जिलों में चौकसी बढ़ा दी गई हैं। सशस्त्र सीमा बल और बिहार पुलिस की संयुक्त टीम ने किशनगंज, सुपौल, किशनगंज, अररिया और सीतामढ़ी में गश्त बढ़ा दी है। वीरपुर, निर्मली और कोसी नदी के दियारा क्षेत्रों में गश्त तेज कर दी गई है। किशनगंज एसपी सागर कुमार ने बताया– सीमावर्ती क्षेत्र में सुरक्षा बलों की चौकियां अलर्ट पर हैं। सुरक्षा कर्मियों को सादे कपड़ों में भीड़–भाड़ वाले क्षेत्रों और सार्वजनिक स्थलों पर तैनात किया गया है।

राजस्थान में 900 से ज्यादा बांग्लादेशी-रोहिंग्या पकड़े गए

जयपुर (एजेंसी)। बांग्लादेश और रोहिंग्या से आए लोगों (घुसपैठिए) का फर्जीवाड़ा पकड़ा गया है। इन लोगों ने राजस्थान के मूल निवासी होने का प्रमाण पत्र तक बनवा लिया। इनके पास से ऐसे दस्तावेज बड़े पैमाने में मिल हैं। ये दस्तावेज गलत तरीके से बनाए गए हैं। ऐसे एक हजार से अधिक बांग्लादेशी–रोहिंग्या को पकड़ा गया है। इनको प्रदेश के अलग–अलग जिलों के 24 से अलग शेल्टर होम में रखा गया है। इनको विशेष विमान से पश्चिम बंगाल भेजा जाएगा। वहां से बांग्लादेश और म्यांमार के लिए रवाना किया जाएगा। राजस्थान में

अवैध रूप से रह रहे ऐसे ही 148 लोगों को 15 मई को पश्चिम बंगाल भेजा जा चुका है। राजस्थान पुलिस और जिला प्रशासन ने अपने–अपने इलाकों में रह रहे बांग्लादेशियों को चिह्नित कर जिले के डिटेंशन सेंटर पर शिफ्ट कर दिया है। डिटेन किए गए लोगों के पास भारत के मूल निवासी होने का वैध प्रमाण पत्र नहीं मिला है। सूत्रों की मानें तो इनके पास से जो भी सर्टिफिकेट मिले हैं, वो फर्जी हैं। ये दस्तावेज आखिर किसकी मिलीभगत से बने हैं, इसकी जांच चल रही है। उधर, एक–दो दिन में कुछ और लोगों को वापस भेजने की तैयारी की गई है। पश्चिम बंगाल से सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के माध्यम से इनको इनके देश भेजा जाएगा। 30 अप्रैल को राजस्थान सरकार ने बांग्लादेशी और रोहिंग्याओं के खिलाफ विशेष अभियान शुरू किया था। इसके बाद जिलों में एक टास्क फोर्स बनाई गई थी। इसका काम मजदूर मिलने वाली जगहों पर सर्च करना और दस्तावेजों की जांच करना था।

ऑपरेशन सिंदूर-पाकिस्तान डमी फाइटर जेट के झांसे में फंसा था

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायु सेना ने दुश्मन के एयर डिफेंस कवच को तोड़ने की ऐसी नायाब तरकीब अपनाई थी, जिसे इस संघर्ष की बड़ी उपलब्धि के तौर पर हमेशा याद रखा जाएगा। भारतीय वायु सेना ने असली फाइटरों जेट की जगह डमी फाइटर जेट का इस्तेमाल किया था। इसके लिए अनमैंड एरियल व्हीकल्सका सहारा लिया गया था।

डीआरडीओ के लक्ष्य और ब्रिटिश बंशी यूएवी को जेट जैसा दिखाने के लिए वजनी बनाया गया। इनमें इंफारेड सिग्नेचर जोड़ा गया था ताकि पाकिस्तानी वायु सेना को लगे कि असली फाइटर आ रहे हैं।पाकिस्तान के मुरीद एयरबेस, सियालकोट, सरगोधा और रहीम यार खान के सामने इन डमी फाइटर जेट की उड़ान भेजी गई थीं। इससे पाकिस्तानी एयर डिफेंस सक्रिय हो गया। पाकिस्तान ने 9 मिसाइल बैटरियों और राडार नेटवर्क को एक्टिवेट कर दिया। भारतीय वायु सेना ने इस स्थिति का फायदा उठाया। हैरोप ड्रोन्स ने पाकिस्तानी मिसाइल बैटरियों और राडार साइट्स को नष्ट कर दिया। इसके चलते पाकिस्तानी वायु सेना बिना रक्षा कवच के रह गई थी। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के कई एयरबेस तबाह किए थे।

पंचतत्व में विलीन हुए कारगिल में शहीद मनीष कुमार

नवादा (एजेंसी)। कारगिल में ड्यूटी के दौरान शहीद मनीष कुमार (22) शनिवार को पंचतत्व में विलीन हो गए। नवादा में उनके पैतृक गांव पांडेय गंगौट में ही राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। दोपहर करीब 1 बजे मनीष का शव घर पहुंचा था। यहां अंतिम दर्शन के बाद पार्थिव देह श्मशान घाट लाई गई। इससे पहले जब पार्थिव शरीर नवादा पुलिस लाइन से घर लाया जा रहा था तब गाड़ी के पीछे 2 किमी लंबी बाइक रैली चलती रही। हजारों की संख्या में लोग हाथों में तिरंगा लिए दिखाई दिए। भारत माता के नारे लगे। शहीद को जिस रास्ते से लाया गया, वहां जगह–जगह पर लोग तिरंगा लेकर श्रद्धांजलि देने के लिए खड़े रहे। मनीष कुमार कारगिल में ऑपरेशन रक्षक में बतौर नर्सिंग स्टाफ तैनात थे। नवादा सीएम ने बताया कि ड्यूटी के दौरान 14 मई की सुबह अचानक उनकी तबीयत बिगड़ी और वे गिर गए। इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। सेना ने 15 मई को मनीष के शहीद होने की जानकारी उनके घरवालों को दी थी। सेना ने मनीष को शहीद का दर्जा दिया है। 3 महीने पहले मनीष की शादी हुई थी। उनकी शहादत की खबर सुनने के बाद पत्नी खुशबू सदमे में हैं। खुशबू का कहना है कि वे भी सेना में जाना चाहती हैं।

राष्ट्रपति द्वारा 14 सवालों की लिस्ट सुपीम कोर्ट को भेजने के बाद आगे क्या संभावनाएं हो सकती हैं?

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्या सुप्रीम कोर्ट ये तय कर सकता है कि राष्ट्रपति और राज्यपाल अपनी शक्तियों का इस्तेमाल किस तरह से करेंगे? क्या सुप्रीम कोर्ट राष्ट्रपति को डेडलाइन के भीतर काम करने का आदेश दे सकता है? ये सवाल पिछले एक महीने से तैर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट वर्सेज संसद की बहस चल रही है और इस बहस में अब देश की प्रथम नागरिक राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की एंट्री हो गई है।

देश के नए प्रधान न्यायधीश को शपथ दिलाए 24 घंटे भी नहीं गुजरे थे कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 14 सवालों की एक लिस्ट सुप्रीम कोर्ट को भेज दी। सुप्रीम कोर्ट का ये ऐतिहासिक फैसला 8 अप्रैल को सुनाया गया था। जिस पर राष्ट्रपति मुर्मू ने कड़ी प्रतिक्रिया जताते हुए कड़े सवाल पूछे हैं। किसी तथ्य या कानूनी मसले पर राष्ट्रपति लोकहित में सुप्रीम कोर्ट की राय ले सकते हैं। केंद्र और राज्यों से जुड़े विवादों की सुनवाई के लिए अनुच्छेद 131 में सुप्रीम कोर्ट के पास मूल क्षेत्राधिकार है। उन मामलों में भी अनुच्छेद 143 (2) के तहत सुप्रीम कोर्ट की राय ली जा सकती है।

जस्टिस बेला त्रिवेदी ने सुप्रीम कोर्ट में बिताया अपना आखिरी दिन, इन फैसलों के लिए रखा जाएगा याद

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यायमूर्ति बेला त्रिवेदी ने भारत के सर्वोच्च न्यायालय में अपना अंतिम कार्य दिवस बिताया, जिसके साथ ही शीर्ष न्यायालय में उनके शानदार कार्यकाल का अंत हो गया। हालाँकि उनकी आधिकारिक सेवानिवृत्ति जून में निर्धारित है, लेकिन उन्होंने समय से पहले ही अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर लिया। न्यायमूर्ति त्रिवेदी उन तीन महिलाओं में से एक थीं जिन्होंने सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में शपथ ली और नौ नई नियुक्तियों में से एक थीं। न्यायमूर्ति त्रिवेदी गुजरात उच्च न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय की न्यायाधीश के रूप में नियुक्त होने वाली पहली महिला न्यायाधीश भी हैं। 2024 के ऐतिहासिक फैसले में 6:1 बहुमत ने फैसला सुनाया कि राज्य अनुसूचित जातियों (एससी) के भीतर उपवर्गीकरण बना सकते हैं ताकि अधिक वंचित समूहों को आरक्षण आवंटित किया जा सके। न्यायमूर्ति त्रिवेदी एकमात्र असहमत थे, जिन्होंने कहा कि राज्यों द्वारा इस तरह का उपवर्गीकरण असंवैधानिक था। अपने अंतिम कार्य दिवस से एक दिन पहले सुनाए गए फैसले में न्यायमूर्ति त्रिवेदी की अगुवाई वाली पीठ ने यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण मामलों के लिए विशेष अदालतों की संख्या की अपर्याप्तता को चिह्नित किया।

सीमावर्ती क्षेत्रों का मनोज सिन्हा ने किया दौरा, सशस्त्र बलों से भी की बात, पाकिस्तान को चेताया

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू–कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने सशस्त्र बलों के सदस्यों के साथ बातचीत की। इससे पहले आज उन्होंने तंगधार सेक्टर में सीमावर्ती क्षेत्र का दौरा किया और पाकिस्तान की ओर से सीमा पार से की गई गोलाबारी से हुए नुकसान का आकलन किया। इस दौरान मनोज सिन्हा ने कहा कि पूरी दुनिया ने भारतीय सशस्त्र बलों की बहादुरी देखी है और फिर वो (पाकिस्तान) पूरी दुनिया में गिड़गिड़ाने लगा। हम कभी भी युद्ध के पक्ष में नहीं रहे हैं। हम शांति से रहना चाहते हैं।

मनोज सिन्हा ने कहा कि आज हम दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और कुछ ही दिनों में चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना चाहते हैं। हम विकसित भारत का सपना लेकर आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन हमारा पड़ोसी कर्ज के बल पर मानवता को नष्ट करने पर तुला हुआ है। मुझे लगता है कि दिए गए जवाब से उन्हें सबक मिला होगा। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में ऐसा कुछ भी नहीं है जो भारतीय सेना की पहुंच से बाहर हो... मैं फिर से आपके शौर्य, पराक्रम और माँ भारती के प्रति समर्पण को नमन करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि जब भी ऐसा संकट आए तो देश को पता चले कि हमारा देश आप जैसे वीरों के सुरक्षित हाथों में है। भारत माता की जय।

मनोज सिन्हा ने गोलाबारी से हुए नुकसान का आकलन करने के बाद कहा कि प्रतिकूल गोलाबारी के कारण यहां कई घर और व्यावसायिक संपत्तियां क्षतिग्रस्त हुई हैं। आज मैंने एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के साथ उन जगहों का दौरा किया, स्थिति को अपनी आंखों से देखा और लोगों से बातचीत करके उनकी समस्याओं को समझा। प्रशासन के आकलन के आधार पर, संभव तत्काल सहायता प्रदान की गई है। कुछ लोगों का पुनर्वास किया जाना बाकी है। लेकिन मुझे लगता है कि यह मदद पर्याप्त नहीं है। डिवीजनल कमिश्नर कश्मीर और वरिष्ठ अधिकारी मिलकर हुए नुकसान के लिए एक व्यापक योजना तैयार करेंगे। इसके आधार पर हम भारत सरकार से अनुरोध करेंगे, और बचे हुए लोगों का पुनर्वास करेंगे।

आप को बड़ा झटका, 15 पार्षदों ने थर्ड फंट बनाने का किया ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी (आप) को बड़ा झटका लगता दिख रहा है। पार्टी के पार्षद हेमचंद्र गोयल के नेतृत्व में करीब 15 पार्षदों की शनिवार को बैठक हुई और इसमें कई फैसले लिए गए। सभी 15 पार्षदों ने थर्ड फंट बनाने का ऐलान किया है। नय गुट का नाम इंद्रप्रस्थ विकास पार्टी रहने की संभावना है जिसका नेतृत्व मुकेश गोयल को देने का फैसला लिया गया है। आप के पास अभी 113 सदस्य हैं। हालांकि, इसमें से अब 15 कब हो गए हैं। भाजपा के पास 117 सदस्य हैं। वहीं, कांग्रेस के पास 8 पार्षद हैं। थर्ड फंट बनाने वालों में दिनेश भारद्वाज, सुमन अनिल राणा, मुकेश गोयल, हेमचंद्र गोयल आदि शामिल हैं। आपको बता दें कि दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) अपनी स्थायी समिति में दो रिक्त पदों को भरने के लिए 22 मई को चुनाव कराएगा, साथ ही विभिन्न वार्ड समितियों के अध्यक्षों और उपाध्यक्षों के लिए भी चुनाव कराएगा। एक

नोटिस में यह जानकारी दी गई। विधायक चुने जाने के बाद दो पार्षदों के इस्तीफे के कारण एमसीडी को स्थायी समिति में रिक्त पदों को भरने के लिए चुनाव कराने पड़ रहे हैं। ये पार्षद पहले क्रमशः दक्षिण जोन और सिटी–एसपी जोन वार्ड समितियों से स्थायी समिति के लिए चुने गए थे।

चुनाव 22 मई को होगा और गुप्त मतदान के माध्यम से प्रतिनिधि चुने जाएंगे।इसी दिन विभिन्न वार्ड समितियों के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पदों के लिए भी चुनाव होंगे।

इनमें नजफगढ़, रोहिणी, करोल बाग, मध्य, नरेला, दक्षिण और सिटी–एसपी जैसे जोन की समितियां शामिल हैं। अप्रैल में भाजपा उम्मीदवार राजा इकबाल सिंह दिल्ली के नए महापौर चुने गए थे। इसके साथ ही भाजपा दो साल बाद दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) में सत्ता में लौट आयी। इकबाल ने कांग्रेस उम्मीदवार मंदीप सिंह को हराया। आम आदमी पार्टी (आप) ने महापौर चुनाव का बहिष्कार किया। महापौर के परिणाम घोषित होने के साथ ही उप महापौर पद के लिए दूसरे चरण का मतदान होने की उम्मीद थी।

संक्षिप्त समाचार

विराट को इस कारण पसंद नहीं करते थे डीविलियर्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व क्रिकेटर एबी डीविलियर्स ने भारतीय टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली से दोस्ती को लेकर एक अहम खुलासा किया है। डीविलियर्स ने कहा कि वह शुरुआत में विराट को पसंद नहीं करते थे पर आईपीएल में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) से खेलने के दौरान उनकी अच्छी दोस्ती हो गयी। डी विलियर्स के अनुसार वह कोहली को उनके प्रतिस्पर्धी रैवेये की वजह से पंद नहीं करते थे क्योंकि वह भी वैसे ही थे। दक्षिण अफ्रीका के इस खिलाड़ी ने माना है कि कोहली एक कठिन प्रतिद्वंद्वी थे और उनके खिलाफ खेलना उनके लिए कठिन था क्योंकि वे बहुत तेजी से प्रतिस्पर्धा करते थे। विलियर्स ने कहा कि विराट मेरा क्रिकेट वाला भाई है। जब मैंने उसे जाना, तब मैं उसे धीरे-धीरे काफी पसंद करने लगा। उसके खिलाफ खेलना बहुत कठिन है। साथ ही कहा कि जब मैं उसे नहीं जानता था तब मैं उसे पसंद नहीं करता था, क्योंकि वह बहुत बेहतरीन व प्रतिस्पर्धी था। वह बिल्कुल मेरी ही तरह था।

ईसीबी ने साउदी को बनाया टीम का सलाहकार

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने भारतीय टीम के खिलाफ अगले माह जून में होने वाली पांच टेस्ट मैचों की सीरीज को देखते हुए न्यूजीलैंड के पूर्व तेज गेंदबाज टिम साउदी को अपनी टीम के साथ सलाहकार के तौर पर जोड़ा है। भारतीय टीम के इंग्लैंड दौरे की शुरुआत 20 जून से लीड्स में होगी। इस दौरे के लिए साउदी पहले टेस्ट से पहले इंग्लैंड टीम से जुड़ जायंगे। ईसीबी का मानना है कि साउदी के जुड़ने से टीम को उनके लंबे अनुभव का लाभ मिलेगा। साउदी ने अपने करियर में 107 टेस्ट मैच में 391 विकेट लिए हैं। ईसीबी ने कहा कि दुनिया भर में अलग-अलग हालातों में खेलने का अनुभव साउदी के पास है। जिससे वह खिलाड़ियों को जरुरी जानकारी दे सकेंगे। सलाहकार की भूमिका के बाद वह बर्मिंघम फीनिक्स के लिए द हंड्रेड में खेलेंगे।

भारत और अमेरिका के बीच नया व्यापार समझौता की पेशकश

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते की पेशकश की है। इस समझौते में भारत ने मूल रूप से अमेरिकी वस्तुओं पर कोई टैरिफ लागू न करने की पेशकश की है। ट्रंप ने कहा कि भारत ने एक बेहतर सौदा पेश किया है जिसमें टैरिफ शामिल नहीं है। इसके साथ ही ट्रंप ने एप्पल के सीईओ टिम कुक से भारत में और अधिक मैन्युफैक्चरिंग प्लांट स्थापित करने की योजना पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी। इन प्लांट्स के निर्माण पर ट्रंप ने विशेष ध्यान देने का आग्रह किया। भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौते के बारे में चर्चाएं शुरू हो गई हैं, जिनमें 2025 तक समझौते को पूरा करने की योजना है। वाणिज्य मंत्रालय ने बताया कि इस समझौते के माध्यम से भारत-अमेरिका के आर्थिक संबंधों को मजबूत और विस्तारित करने का काम किया जा रहा है।

'गोल्डन बॉय' नीरज ने फेंका 90 मीटर से ज्यादा दूर भाला, पीएम मोदी ने दी बधाई

कहा- यह कड़ी मेहनत, अनुशासन और जुनून का नतीजा, हमें उन पर गर्व

नई दिल्ली,(एजेंसी)। भारत के 'गोल्डन बॉय' नीरज चोपड़ा ने दोहा डायमंड लीग 2025 में कमाल कर दिया है। नीरज चोपड़ा ने जैवलीन थ्रो में 90.23 मीटर दूर भाला फेंककर दुनिया में खलबली मचा दी है। उनकी इस सफलता से भारत में खुशी का माहौल है। नीरज चोपड़ा के इस रिकॉर्ड से पीएम मोदी भी गदगद हैं। पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा- 'वाह! क्या शानदार उपलब्धि है! दोहा डायमंड लीग 2025 में 90 मीटर का आंकड़ा पार करने और अपना सर्वश्रेष्ठ थ्रो हासिल करने के लिए नीरज चोपड़ा को बहुत-बहुत बधाई। यह उनकी कड़ी मेहनत, अनुशासन और जुनून का ही नतीजा है। उनकी इस सफलता पर पूरा भारत खुश है और गर्व कर रहा है। भारत के 'गोल्डन बॉय' नीरज चोपड़ा ने शुक्रवार को दोहा डायमंड लीग में पहली बार 90 मीटर के पार भाला फेंककर इतिहास रच दिया है। उन्होंने फाइनल में अपने तीसरे प्रयास में 90.23 मीटर भाला फेंककर अपना पर्सनल बेस्ट बनाया। इससे पहले उनका सर्वश्रेष्ठ थ्रो 89.94 मीटर था, जो उन्होंने 30 जून 2022 को स्टॉकहोम डायमंड लीग में फेंका था। बेस्ट थ्रो के बावजूद नीरज चोपड़ा को सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा। जर्मनी के वेबर जूलियन ने 91.06 मीटर के साथ गोल्ड मेडल जीता था। नीरज छह में से पांचवें थ्रो तक नंबर एक पर थे, लेकिन छठे और आखिरी थ्रो में जूलियन उनसे आगे निकल गए थे। 90 मीटर की दूरी केवल एक आंकड़ा नहीं थी, बल्कि नीरज चोपड़ा के लिए यह एक चुनौती थी। वह कई बार इस आंकड़े के बेहद करीब पहुंचे थे, लेकिन हर बार 88 या 89 मीटर तक सीमित रह गए। नीरज चोपड़ा ने जब तीसरे प्रयास में यह ऐतिहासिक थ्रो फेंका तो पूरा मैदान झूम उठा।

इस प्रदर्शन में उनके नए कोच जान जेलेज्नी की भूमिका अहम मानी जा रही है। उन्होंने हाल ही में जर्मन कोच डॉ. क्लॉस बार्टोनिएट्ज को हटाकर तीन बार के ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता जेलेज्नी को अपना कोच बनाया था। इस थ्रो के साथ नीरज अब 90 मीटर क्लब में शामिल हो गए हैं, जिसमें ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता पाकिस्तान के अरशद नदीम जैसे खिलाड़ी पहले से ही मौजूद हैं। यह उपलब्धि नीरज के लिए सिर्फ एक रिकॉर्ड नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी एक बहुत बड़ी जीत है। दोहा में यह नीरज का इस सीजन का पहला बड़ा मुकाबला था, जहां उनका सामना दो बार के वर्ल्ड चैंपियन और 2024 ओलंपिक कांस्य पदक विजेता ग्रेनेडा के पीटर्स एंडरसन, चेकिया के याकूब वाडलेजच (2024 के दोहा विजेता), जर्मनी के वेबर जूलियन और मैक्स डेह्रिंग, केन्या के जूलियस येगो और जापान के रोडरिक जेंकी डीन जैसे दिग्गजों से हुआ। इन सभी को पीछे छोड़ नीरज ने यह रिकॉर्ड बनाया।

नीरज चोपड़ा को लेफ्टिनेंट कर्नल की मानद उपाधि

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना ने ओलंपिक पदक विजेता भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा को लेफ्टिनेंट कर्नल की मानद उपाधि से सम्मानित किया है। नीरज ने ओलंपिक में स्वर्ण और रजत पदक जीते हैं। इसके अलावा वह विश्व चैम्पियनशिप विजेता भी हैं। नीरज 26 अगस्त 2016 को नायब सूबेदार के रूप में भारतीय सेना में जूनियर कमीशंड अधिकारी के रूप में पहली बार शामिल हुए थे। इसके दो वर्ष बाद नीरज को एथलेटिक्स में शानदार प्रदर्शन के लिए अर्जुन पुरस्कार मिला और फिर 2021 में खेल रत्न से सम्मानित किया गया। इस वर्ष उन्हें सूबेदार के पद पर पदोन्नत किया गया। टोक्यो ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने पर नीरज को 2022 में भारतीय सेना के सर्वोच्च शांतिकालीन सम्मान परम विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया। उन्हें टेरिटोरियल आर्मी में लेफ्टिनेंट कर्नल की मानद रैंक दी गई भारतीय सेना ने इससे पहले भी कई प्रसिद्ध खिलाड़ियों को उनके खेल में उत्कृष्ट योगदान और राष्ट्र के प्रति समर्पण के लिए मानद सैन्य उपाधियाँ प्रदान की थीं। अभिनव बिंद्रा- निशानेबाज अभिनव बिंद्रा को टेरिटोरियल आर्मी में लेफ्टिनेंट कर्नल की मानद रैंक दी गई। बिंदा ओलंपिक 2008 में 10 मीटर एयर राइफल में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय व्यक्तिगत ओलंपिक चैंपियन रहे हैं। कपिल देव- भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव को 2008 में टेरिटोरियल आर्मी में लेफ्टिनेंट कर्नल की मानद रैंक प्रदान की गई। यह सम्मान उनके क्रिकेट में योगदान और नेतृत्व के लिए दिया गया। कपिल की कप्तानी में ही साल 1983 में भारतीय टीम ने विश्वकप सहित कई अन्य खिताब जीते थे। महेंद्र सिंह धोनी- पूर्व भारतीय क्रिकेट कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी को 2011 में 106 टेरिटोरियल आर्मी बटालियन (पैरा) में लेफ्टिनेंट कर्नल की मानद रैंक दी गई। वे एक योग्य पैराट्रूपर भी हैं, जिन्होंने पांच पैराशूट प्रशिक्षण कूद पूरी की। धोनी ने 2019 में कश्मीर में 15 दिन की स्वैच्छिक सेवा भी दी। धोनी की कप्तानी में भारतीय टीम ने 2011 विश्वप के अलावा कई अन्य आईसीसी खिताब भी जीते थे। सचिन तेंदुलकर- महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर को 2010 में भारतीय वायु सेना ने ग्रुप कैप्टन की मानद उपाधि प्रदान की। यह सम्मान उनके क्रिकेट में अभूतपूर्व योगदान और युवाओं को प्रेरित करने के लिए दिया गया।

ओलिंपिक खेलों को लेकर वेस्टइंडीज बोर्ड ने आईसीसी और आयोजकों से पूछे सवाल

जमैका (ईएमएस)। क्रिकेट की 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक से वापसी हो रही है। इसी को लेकर वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड (सीडब्ल्यूआई) ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) और ओलंपिक आयोजकों से कुछ सवाल पूछे हैं। सीडब्ल्यूआई ने पूछा है कि इन खेलों के लिए प्रवेश प्रणाली क्या होगी ये अभी साफ नहीं हुआ है। साल ही कहा है कि इन खेलों में पुरुष और महिला वर्ग में 6-6 टीमों को ही भाग लेना है पर किस प्रकार से प्रवेश मिलेगा ये भी साफ नहीं किया गया है। वहीं अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक कमेटी आईओसी के अनुसार पुरुष और महिला वर्ग में 6-6 टीमें खेलेंगी पर उसने ये नहीं बताया कि वे कौन सी टीमें होंगी। इसके लिए रैंकिंग को आधार बनाया जाएगा या पाथवे टूर्नामेंट के जरिए या फिर हर महाद्वीप को बर्थ आवंटित की जाएगी। वहीं ओलंपिक आयोजकों ने इस मामले में हाल ही में ये भी कहा कि इस प्रकार के निर्णय आईसीसी लेगी। ये भी कहा जा रहा है कि शायद ओलंपिक में बारबाडोस की टीम के रूप में खेलना पड़ सकता है। इंग्लैंड की टीम के साथ भी इसी प्रकार होगा क्योंकि इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्स और नोर्दन आयरलैंड यूके के रूप में खेलते हैं। सीडब्ल्यूआई के सीईओ क्रिस डेहरिंग ने कहा कि कहा, यदि रैंकिंग का प्रयोगआईसीसी द्वारा अपनाया जाता है जैसे शीर्ष 6 और वेस्टइंडीज पुरुष टीम को 5वां स्थान दिया जाता है, तो हमें यह चुनने का अवसर मिलता है कि हमारे देशों में से कौन सा देश (जैसे जमैका, बारबाडोस, आदि) ओलंपिक में वेस्टइंडीज का प्रतिनिधित्व करेगा और हम सिर्फ इसलिए बाहर नहीं रह जाएंगे, क्योंकि वेस्टइंडीज एक टीम के रूप में भाग नहीं ले सकता।

मेरा लक्ष्य अच्छी वापसी करना है - स्टोक्स

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के स्टार ऑलराउंडर बेन स्टोक्स कहा है कि वह अपनी हैमस्ट्रिंग चोट के बाद की रिहैबिलिटेशन (पुनर्वास) प्रक्रिया से गुजर रहे है और उनका लक्ष्य तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर के रूप में धमामेदार वापसी करना है। स्टोक्स दिसंबर में हुए टेस्ट मैच में न्यूजीलैंड के खिलाफ हुए टेस्ट में हैमस्ट्रिंग में लगी चोट के बाद बाहर हो गये थे। उसके बाद से ही वह खेल से दूर हैं। इसी कारण वह इंग्लैंड के भारत दौरे और चैंपियंस ट्रॉफी से भी बाहर रहे थे। स्टोक्स इसके बाद से ही फिटनेस हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं। स्टोक्स ने कहा, मैं हमेशा कड़ी मेहनत करता हूं। जब मैं फिट नहीं होता हूं, तो मेरा प्रयास पहले से बेहतर फिटनेस हासिल करने का रहता है। मैंने अपने क्रिकेट से लेकर फिटनेस तक हर चीज़ पर बहुत मेहनत की है और मुझे पता है कि जब मैं इस बार मैदान पर वापसी करूंगा तो मेरी फिटनेस सबसे अच्छे स्तर की होगी। स्टोक्स पहले भी कई बार चोटिल होने के कारण खेल से दूर रहे हैं। पिछले साल अगस्त में 'द हंड्रेड' टूर्नामेंट के दौरान चोट लगने के के कारण वह श्रीलंका के खिलाफ तीन और पाकिस्तान के खिलाफ लगातार चार टेस्ट मैचों से बाहर रहे थे। साल के अंत में वह न्यूजीलैंड दौरे के लिए फिट होने की कोशिश कर रहे थे पर उनकी चोट फिर से उभर आई। वहीं इस बार अंतरराष्ट्रीय कैलेंडर में खाली समय मिलने से उन्होंने अपने रिहैब को आराम से पूरा किया है। उन्होंने कहा, मैं अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ हूं, लेकिन चार महीने की इस प्रक्रिया के आखिरी चरण में हूं और इस गर्मी में मैदान पर वापसी को लेकर काफी उत्साहित हूं। भारत के खिलाफ घरेलू सीरीज से पहले इंग्लैंड 22 मई को जिम्बाब्वे के खिलाफ एकमात्र टेस्ट मैच खेलेगा, जिससे खिलाड़ियों को कुछ मैच अभ्यास मिल सके। स्टोक्स ने कहा कि वह इंग्लैंड के कोच ब्रेंडन मैकुलम के साथ लगातार संपर्क में हैं, जिससे वह अपनी फिटनेस और फॉर्म की जानकारी उन्हें दे सकें।

आरबीआई आगामी महीनों में कर सकता है रेपो रेट में कटौती

होम और कार लोन लेने वालों को मिल सकती है बड़ी राहत

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) आने वाले महीनों में ब्याज दरों में कटौती कर सकता है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक जून से दीपावली (20 अक्टूबर) तक रेपो रेट में कुल 0.50 फीसदी की कटौती की संभावना है। इस कटौती का सीधा असर होम लोन, कार लोन और अन्य कर्जों की ईएमआई को भी प्रभावित करेगा। आरबीआई की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की अगली बैठक 4 से 6 जून के बीच होने वाली है, जिसमें 0.25 फीसदी की कटौती लगभग तय मानी जा रही है। इसके बाद 5 से 7 अगस्त या फिर 29 सितंबर से 1 अक्टूबर के बीच होने वाली बैठक में एक और 0.25 फीसद ी की कटौती की संभावना है। रेपो रेट में अब तक 0.50 फीसदी की कटौती हो चुकी है। आरबीआई ने इस वर्ष फरवरी से दरों में कटौती शुरू की थी और अब तक दो बैठकों में कुल 0.50 फीसदी की कटौती कर रेपो रेट को 6 फीसदी तक ला चुका है। यदि आगामी दो बैठकों में और कटौती होती है, तो यह दर और सस्ती हो जाएगी, जिससे उद्योगों को किफायती दरों पर कर्ज मिलेगा और आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा। एसबीआई सिक्योरिटीज के डिप्टी वाइस प्रेसिडेंट ने कहा कि रेट कट के लिए सभी आर्थिक कारक अनुकूल हैं। महंगाई काबू में है, मानसून सामान्य रहने के संकेत हैं और जीडीपी स्थिर बनी हुई है। खुदरा महंगाई जुलाई 2019 के बाद सबसे निचले स्तर पर है। ऐसे में ब्याज दरों में कटौती की पूरी संभावना है।

जेएसडब्लू एनर्जी का मुनाफा 20.05 प्रतिशत बढ़ा

मुंबई (एजेंसी)। विद्युत उत्पादक कंपनी जेएसडब्ल्यू एनर्जी का 31 मार्च को समाप्त वित्त वर्ष की जनवरी-मार्च तिमाही में सकल मुनाफा इसके पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 345.27 करोड़ रुपये के मुकाबले 20.05 प्रतिशत की बढ़ोतरी लेकर 414.51 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि वित्त वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही में उसे 414.51 करोड़ रुपये का सकल मुनाफा हुआ, जो वित्त वर्ष 2023-24 की इसी तिमाही के 345.27 करोड़ रुपये के मुकाबले 20.05 प्रतिशत अधिक है।

रोस्टन चेज बने वेस्टइंडीज के नए कप्तान, 2016 में किया था डेब्यू

नई दिल्ली,(एजेंसी)। वेस्टइंडीज ने रोस्टन चेज को नया टेस्ट कप्तान बनाया है। बारबाडोस में जन्मे चेज दाएं हाथ के बल्लेबाज और दाएं हाथ के ऑफ-ब्रेक गेंदबाज हैं। 6 फीट 5 इंच लंबे चेज मैदान पर अपने शांत स्वभाव के लिए जाने जाते हैं और खेल के सभी फॉर्मेट में वेस्टइंडीज के लिए प्रमुख खिलाड़ी हैं। क्रैग ब्रैथवेट ने इस साल के शुरू में मार्च में अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। अब उनकी जगह चेज लेंगे। साल 2016 में चेज ने टेस्ट मैच से डेब्यू किया था। उन्होंने 21 जुलाई 2016 में भारत के खिलाफ पहला मैच खेला था। दूसरे ही टेस्ट मैच में उन्होंने भारतीय टीम के खिलाफ शतक ठोक था। इसके अलावा उन्होंने पांच विकेट लेने की उपलब्धि हासिल की थी।

ऐसा करने वाले वे वेस्टइंडीज के चौथे खिलाड़ी बन गए थे। हालांकि, इसके बावजूद यह टेस्ट सीरीज भारत ने जीती थी। रोस्टन चेज ने वेस्टइंडीज के लिए अब तक 49 टेस्ट मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 26.33 की औसत से 2265 रन बनाए हैं, जिसमें पांच शतक शामिल हैं। उन्होंने 85 विकेट भी लिए हैं। जनवरी 2019 में इंग्लैंड के खिलाफ एक टेस्ट मैच में चेज ने चौथी पारी में 60 रन देकर 8 विकेट लिए थे जो एक शानदार प्रदर्शन था। कोच डैरन सैमी ने एक बयान में कहा कि हमारे नए कप्तान चेज ने अपने साथियों का सम्मान अर्जित किया है, वह इस भूमिका के साथ आने वाली जिम्मेदारी को समझते हैं। टीम को अब आगे ले जाने की जरूरत है। चेस के सामने पहले चुनौती ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज होगी, जो नए विश्व टेस्ट चैंपियनशिप सेशन में दोनों टीमों के लिए पहला मैच होगा। यह सीरीज 25 जून से शुरू होकर 17 जुलाई तक चलेगी। वेस्टइंडीज दौरे पर ऑस्ट्रेलिया को कुल 3 टेस्ट मैच खेलने हैं। दोनों टीमों का ऐलान होना है। वेस्टइंडीज के जोमेल वारिकन को टीम का उप-कप्तान बनाया गया है।

फ्रेंच ओपन में रफेल नडाल का सम्मान होगा - एमिली मौरेस्मो

पेरिस (एजेंसी)। स्पेन के टेनिस स्टार रफेल नडाल को फ्रेंच ओपन टेनिस के पहले दिन 25 मई को कोर्ट फिलिप चैट्रियर में सम्मानित किया जाएगा। नडाल बाईस बार के ग्रैंडस्लैम चैंपियन फ्रेंच हैं। 14 बार के विजेता नडाल ने पिछले साल नवंबर में खेल को अलविदा कह दिया था। फ्रेंच ओपन की निदेशक एमिली मौरेस्मो ने कहा कि नडाल ने कई प्रकार से फ्रेंच ओपन को प्रभावित किया है। इसलिए उनके सम्मान में एक समारोह आयोजित किया जाएगा। नडाल वह टूर्नामेंट संग्रहालय में एक प्रदर्शनी में भी शामिल होंगे और आधिकारिक फ्रेंच ओपन ट्रेलर में अपनी आवाज देंगे। नडाल फ्रेंच ओपन में अंतिम बार 2024 में खेले थे पर इसमें वह पहले दौर में ही एलेक्जेंडर ज्वेरेव से हार गए थे। उनके नाम चारों ग्रैंड स्लैम खिताब हैं। नडाल ने पुरुष टेनिस में सबसे अधिक 22 ग्रैंड स्लैम खिताब जीते हैं। इसमें 14 फ्रेंच ओपन दो ऑस्ट्रेलियाई ओपन और दो विम्बलन खिताब के अलावा 4 अमेरिकी ओपन खिताब हैं। इसके अलावा उन्होंने 2008 बीजिंग ओलंपिक में पुरुष एकल में स्वर्ण पदक जीता था। इसके अलावा एटीपी टूर्नामेंट खिताब- 92 एकल खिताब, जिसमें 36 मास्टर्स 1000 खिताब और 23 एटीपी 500 खिताब शामिल हैं। डेविस कप- स्पेन के लिए 5 बार (2004, 2008, 2009, 2011, 2019) डेविस कप जीता। वह 209 हफ्तों तक एटीपी रैंकिंग में नंबर 1 रहे, पहली बार 2008 में शीर्ष स्थान हासिल किया।

मुनाफावसूली से शेयर बाजार में रहा उतार-चढ़ाव

सेंसेस 200 अंक गिरकर 82,330.59 अंक पर बंद

निटी बैंक 42 अंक गिरकर 25,019.80 पर बंद

मुंबई (एजेंसी)। बीते सप्ताह घरेलू शेयर बाजार में मुनाफावसूली के चलते सप्ताह भर उतार-चढ़ाव भरा कारोबार दर्ज किया गया। सप्ताह की शुरुआत में तेजी के साथ खुलने वाला शेयर बाजार आखिर में गिरावट के साथ बंद हुआ। बीते सप्ताह के पांच कारोबारी दिनों पर नजर डालें तो ऑपरेशन सिंदूर के बाद चार दिन तक चले संघर्ष के थमने के बाद सोमवार को घरेलू शेयर बाजार में रौनक लौटी। भारत और पाकिस्तान के बीच शनिवार को हुए सीफफायर से निवेशकों की चिंताए कुछ हद कम हुईं, जिसका असर सोमवार को देखने को मिला। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 2,256.91 अंक चढ़कर 81,716.13 अंकों के स्तर पर खुला और 2,975.43 अंक की बढ़त के साथ 82,429.90 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी 705.16 अंक उछलकर 24,713.15 के स्तर पर खुला और 916.70 अंक की बढ़त के साथ 24,924.70 अंक पर बंद हुआ। मंगलवार को बीते दिन की बंपर उछाल खोते हुए शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 497.5 अंक गिरकर 81,932.40 अंक पर खुला और 1,281.68 अंक गिरकर 81,148.22 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी 117.2 अंक गिरकर 24,807.50 अंक पर खुला और 346.35 अंक गिरकर 24,578.35 अंक पर बंद हुआ। बुधवार को सेंसेक्स 281.43 अंक चढ़कर 81,429.65 अंक पर खुला और 182.34 अंक की बढ़त के साथ 81,330.56 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी 96.65 अंक चढ़कर 24,675 अंक पर खुला और 88.55 अंक की तेजी के साथ 24,666.90 अंक पर बंद हुआ।

गुरुवार को सेंसेक्स 254.58 अंक की गिरावट लेकर 81,075.98 पर खुला और 1,200.18 अंक उछलकर सात महीने के उच्चतम स्तर 82,530.74 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी-50 भी 64.70 अंक की गिरावट लेकर 24,602.20 पर खुला और 395.20 अंक बढ़कर सात महीने के उच्चतम स्तर 25,062.10 पर बंद हुआ। शुरुआती कारोबार में आईटी, फाइनेंशियल सर्विस और फार्मा सेक्टर में बिकवाली देखी गई। सुबह शुरुआत के बाद सेंसेक्स 231.64 अंक की गिरावट के साथ 82,299.10 पर खुला और 200.15 अंक गिरकर 82,330.59 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी बैंक 52.40 अंक की गिरावट के साथ 55,303.20 पर खुला और 42.30 अंक गिरकर 25,019.80 पर बंद हुआ।

विजय शाह, देवड़ा के बाद अब विधायक नरेंद्र प्रजापति का विवादास्पद बयान

‘सीजफायर यूएन के आदेश पर हुआ’

अपनी ही सरकार पर खड़े कर दिए सवाल

कांग्रेस बोली- सच सामने आ रहा

विधायक ने तिरंगा यात्रा के कार्यक्रम को संबोधित किया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के मनगवां से भाजपा विधायक नरेंद्र प्रजापति ने दावा किया कि भारत ने यूनाइटेड नेशंस के आदेश के चलते सीजफायर किया है। विधायक तिरंगा यात्रा के बाद मंच से जनता को संबोधित कर रहे थे।

बता दें, भारत-पाकिस्तान चार दिन बॉर्डर पार ड्रोन और मिसाइल हमलों के बाद संघर्ष को खत्म करने के लिए 10 मई को एक समझौते पर पहुंचे थे। पाकिस्तान के छ्तरू ने भारत के छ्तरू को फोन कर सीमा पर सीजफायर की गुजारिश की थी। जिसके बाद दोनों देशों की आपसी सहमति से सीजफायर पर मुहर लगाई गई थी।

पूरे मामले को लेकर भाजपा की तरफ से दावा किया गया था कि भारत ने संयुक्त राष्ट्र या फिर अन्य दूसरे देश के दबाव में आकर इस तरह का निर्णय नहीं किया है। बल्कि भारत ने यह निर्णय खुद किया है।

अब अपने इस बयान से भाजपा विधायक नरेंद्र प्रजापति ने अपनी ही सरकार और पार्टी पर सवाल खड़े कर दिए हैं। जिसमें यह कहा गया था कि भारत ट्रंप और अमेरिका के दबाव के चलते कोई निर्णय नहीं कर रहा है। बल्कि भारत पूरी तरह से स्वतंत्र होकर आतंकवाद का जवाब दे रहा है।

नरेंद्र प्रजापति के बयान के 3 दिन पहले प्रधानमंत्री मोदी अपने बयान में यह कह चुके हैं कि भारत किसी के दबाव में फैसला नहीं करता। भारत जवाब देना जानता है।

भाजपा नेताओं के बयानों को लेकर कांग्रेस हमलावर हो गई है। कांग्रेस की प्रदेश उपाध्यक्ष कविता पांडे ने कहा कि जिस तरह से भाजपा विधायक ने बयान दिया है, उससे यह स्पष्ट हो रहा है कि सरकार की तरफ से जितने भी दावे किए जा रहे थे कि वह दबाव में नहीं है। भाजपा के विधायक ही सरकार की पोल खोल रहे हैं कि बड़ी-बड़ी वीरता की बातें करने वाले महोदय कितने दबाव में हैं।

अब स्पष्ट हो रहा है कि सरकार ने अमेरिका के दबाव से ही सीजफायर का फैसला लिया। क्योंकि, इंदिरा होना आसान नहीं है, न ही पाकिस्तान को तोड़कर बांग्लादेश बना देना आसान है। विधायक को अपनी हैसियत में रहकर बयानबाजी करना चाहिए। सेना के शौर्य और पराक्रम पर प्रश्न चिन्ह किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

नरेंद्र 2023 में पहली बार विधायक बने हैं। पार्टी ने सिटिंग रू पंचूलाल प्रजापति का टिकट काटकर नरेंद्र को उम्मीदवार बनाया था। नरेंद्र इससे पहले तब विवादों में आए थे जब 14 जनवरी को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ हुई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की फोटो छेड़छाड़ करके सोशल मीडिया पर अपने अकाउंट से शेयर की थी। इसमें उन्होंने त्योंथर से भाजपा विधायक सिद्धार्थ तिवारी को सफेद रंग से कवर कर दिया था।

सतना में कांग्रेसियों ने मंत्री विजय शाह का पुतला जलाया

कर्नल सोफिया पर विवादित बयान का विरोध

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में शनिवार की शाम धवारी चौराहे पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मध्य प्रदेश के मंत्री विजय शाह का पुतला दहन किया। यह विरोध प्रदर्शन ऑपरेशन सिंदूर को लेकर कर्नल सोफिया पर मंत्री द्वारा दिए गए विवादास्पद बयान के विरोध में किया गया।

कांग्रेस के शहर जिलाध्यक्ष मकसूद अहमद और ग्रामीण अध्यक्ष दिलीप मिश्रा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने मंत्री विजय शाह और भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों ने मंत्री विजय शाह से इस्तीफे की मांग की।

इसी दौरान शहर में सर्व समाज द्वारा तिरंगा यात्रा भी निकाली गई। कांग्रेस पदाधिकारियों ने मंत्री के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

सतना में पशु और नशीले पदार्थों का तस्कर गिरफ्तार

40 भैंस और कोरेक्स सीरप के साथ पकड़ा था ट्रक, जिले में दर्ज हैं 10 से ज्यादा मामले

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना पुलिस ने शनिवार को कुख्यात पशु और मादक पदार्थ तस्कर निहाल अख्तर (45) को गिरफ्तार किया है। निहाल खूंथी जवाहर नगर का रहने वाला है। सिटी कोतवाली और कोठी थाना पुलिस ने संयुक्त अभियान में उसे पकड़ा।

7 अप्रैल को कोठी पुलिस ने सतना-चित्रकूट मार्ग पर एक ट्रक को रोका। इस ट्रक से 40 भैंस और 36 शीशी प्रतिबंधित कोरेक्स सीरप बरामद हुई। पुलिस ने ट्रक में मौजूद चालक समेत 4 लोगों को गिरफ्तार किया। पूछताछ में पता चला कि सरगना निहाल ब्लैक स्कॉर्पियो में ट्रक के पीछे था। पुलिस उसका पीछा करती, इससे पहले ही वह फरार हो गया।

40 दिनों तक फरार रहने के बाद शनिवार सुबह मुखबिर की सूचना पर निहाल को सतना से पकड़ा गया। पुलिस के अनुसार आरोपी के खिलाफ जिले के विभिन्न थानों में पशु तस्करी और टोल प्लाजा पर मारपीट समेत 10 से अधिक मामले दर्ज हैं।

शहर के बीचों-बीच लगाया जा रहा था सट्टा, तलाश में जुटी पुलिस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में जुएं और सट्टे के कारोबार पर कार्रवाई की तैयारी है। शहर के द्वारिका नगर में जुएं के फड़ को संचालित करने वाले दो मुख्य आरोपियों की पहचान कर ली गई है। इनमें से एक आरोपी आदतन अपराधी और पुराना जिलाबदर है। दोनों फरार हैं, जिनकी पुलिस तलाश कर रही है।

दोनों लाखों की अवैध कमाई कैश में साथ लेकर फरार हैं। इसके पहले गुपचुप तरीके से रात 2 बजे जुएं के फड़ पर दबिश दी थी। जहां द्वारिका नगर स्थिति फ्लैट पर जुएं का कारोबार संचालित पाया गया था।

थाना अमहिया क्षेत्र के द्वारिका नगर में कल सूचना मिली थी कि एक फ्लैट में अवैध रूप से जुएं का फड़ संचालित किया जा रहा है। जिसके बाद टीम बनाकर वहां पर रेड डाली गई थी। आरोपी पकड़े गए थे, 2 आरोपी मौके से फरार हो गए थे।

जुए के फड़ का संचालक और मुख्य आरोपी कशिश चंदवानी को बनाया गया है। जबकि वसीम नाम का आदतन अपराधी भी इसमें प्रमुख रूप से शामिल है। जो जिलाबदर का आरोपी भी रह चुका है। जो पहले भी जुएं और सट्टे जैसी गतिविधियों में संलिप्त रह चुका है। एसपी विवेक सिंह ने बताया कि जुए के पूरे नेटवर्क का पता लगाया जा रहा है। पकड़े गए आरोपियों से पूछताछ लगातार जारी है। जहां भी इस तरह की अवैध गतिविधि संचालित होती पाई जाएगी। टीम के माध्यम से कार्रवाई की जाएगी। इस कारोबार से जुड़े अन्य लोगों को भी चिह्नित किया जा रहा है। जिन पर नकेल कसी जाएगी।

सोहागी घाटी में फिर बड़ा हादसा पुट्टी से भरा ट्रक पलटा, एक मृत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा-प्रयागराज हाईवे स्थित सोहागी घाटी में शनिवार सुबह एक बार फिर सड़क हादसा हुआ। पुट्टी से भरा ट्रेलर अनियंत्रित होकर पलट गया, जिससे उसमें सवार क्लीनर की इलाज के दौरान मौत हो गई, जबकि ड्राइवर गंभीर रूप से घायल है। हादसे के कारण घाटी मार्ग पर कुछ देर के लिए आवाजाही बाधित हो गई।

ट्रक पलटने से सड़क पर पुट्टी बिखर गई। ट्रक को हटाने के लिए मौके पर जेसीबी और क्रेन की मदद ली गई। हादसे के बाद पुलिस और रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची और दोनों घायलों को ट्रक की केबिन से निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया।

सोहागी थाना प्रभारी पवन शुक्ला ने बताया कि सुबह करीब 6.30 बजे सूचना मिली कि रीवा से प्रयागराज जा रहा ट्रेलर ट्रक घाटी में पलट गया है। मौके पर पहुंचने पर ट्रक की केबिन में दो लोग फंसे हुए मिले। जेसीबी की मदद से उन्हें बाहर निकाला गया और अस्पताल भेजा गया। मृतक की पहचान मोनू राय (30 वर्ष), निवासी मऊ (उत्तर

प्रदेश) के रूप में हुई है। वहीं चालक गंभीर घायल है और उसका उपचार अस्पताल में चल रहा है।

हादसे का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है, लेकिन प्रारंभिक जांच में अनुमान लगाया जा रहा है कि चालक ट्रक पर से नियंत्रण खो बैठा, जिससे वाहन डिवाइडर से टकराकर पलट गया। फिलहाल पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच की जा रही है।

युवती ने पुलिस से कहा- मुझे मेरा पति चाहिए, कानूनी कार्रवाई नहीं

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के चित्रकूट थाना क्षेत्र के युवक पर बिहार की एक युवती ने प्रेम विवाह के बाद छोड़ देने का आरोप लगाया है। युवती शुक्रवार को युवक की तालाश में चित्रकूट थाने पहुंची। उसने पुलिस से कहा कि उसे पति वापस चाहिए, कोई कानूनी कार्रवाई नहीं चाहिए।

जानकारी के मुताबिक, चित्रकूट के वार्ड क्रमांक 14 चौबेपुर निवासी लवकुश यादव ने 4 साल पहले बिहार के पटना जिले की रहने वाली एक युवती से प्रेम विवाह किया था। शादी के बाद दोनों किराए का कमरा लेकर रह रहे थे, लेकिन 15 दिन पहले अचानक लवकुश ने अपनी पत्नी से मारपीट की और उसे बिना बताए अपने गांव आ गया।

युवती का आरोप है कि लवकुश ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसके माता-पिता उसकी दूसरी शादी करना चाहते हैं और वह भी दूसरी शादी के लिए गांव आया हुआ है। पुलिस ने जब इस मामले में पूछताछ की तो युवती ने कार्रवाई से साफ इनकार कर दिया। उसने कहा कि मुझे मेरा पति वापस चाहिए कार्रवाई नहीं।

जानकारी के मुताबिक, करीब पांच साल पहले सूरत में काम के दौरान लवकुश और युवती की मुलाकात हुई थी। दोनों के बीच प्रेम संबंध बना और फिर चार साल पहले उन्होंने शादी कर ली। शादी के बाद से दोनों पटना में रह रहे थे।

थाना प्रभारी डीआर शर्मा ने बताया कि अभी तक कोई लिखित शिकायत नहीं मिली है। पीड़िता कोई कार्रवाई भी नहीं चाहती है। वह सिर्फ अपने पति को वापस ले जाना चाहती है।

मऊगंज में 10 घंटे कुइया में फंसे रहे 75 साल के बुजुर्ग, 6 घंटे चले रेस्क्यू के बाद सुरक्षित निकाला

रस्सी के सहारे अंदर उतरे एसडीईआरएफ जवान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज में 75 साल के एक बुजुर्ग 25 फीट गहरी कुइया में गिर पड़े। 10 घंटे से ज्यादा समय तक कुइया में फंसे रहने के बाद उन्हें सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। एसडीईआरएफ की टीम के जवान रस्सी की मदद से अंदर उतरे और बुजुर्ग को बाहर लाए। करीब 6 घंटे तक रेस्क्यू ऑपरेशन चला।

रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान कलेक्टर संजय कुमार जैन, एसपी दिलीप कुमार सोनी, एएसपी विक्रम सिंह समेत पुलिस-प्रशासन के अन्य अधिकारी और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर मौजूद रहे। बुजुर्ग रामगोपाल कुशवाहा को बाहर निकालने के बाद उन्हें प्राथमिक उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हनुमना ले जाया गया।ये घटना जिले के शाहपुर थाना क्षेत्र के खटखरी गांव की है।

कुइया में गिरे बुजुर्ग को पहले सीधे निकालने की कोशिश की गई। लेकिन जब सफलता नहीं मिली तो फिर कुएं के पैरलल जेसीबी से गड्ढा खोदना शुरू किया। इसमें समय ज्यादा लग रहा था। जिसके बाद कलेक्टर संजय कुमार जैन के निर्देश पर कुइया में गैस का पता लगाया गया। उसमें मीथेन गैस होने का पता चला। मीथेन गैस को निष्क्रिय करने के लिए उसमें ऑक्सीजन गैस डाली गई। जब ऑक्सीजन लेवल बराबर मात्रा में हो गया तब एसडीईआरएफ की टीम के सदस्य रस्सी की मदद से कुएं में उतरे। उन्होंने बड़ी सूझबूझ के साथ संकरी कुइया से बुजुर्ग को बाहर निकाला।

बताया जा रहा है कि बुजुर्ग रामगोपाल कुशवाहा सुबह 11 बजे घर से निकले थे। काफी देर तक जब वह वापस नहीं लौटे तो परिजनों ने उनकी तलाश शुरू की। खोजबीन के दौरान पता चला कि वे एक बहुत ही संकरी सूखी कुइया में गिर पड़े है।

परिजन और गांव वालों ने पहले तो उन्हें अपने स्तर पर कुइया से निकालने की कोशिश की, लेकिन जब कोई कामयाबी नहीं मिली तो फिर पुलिस और प्रशासन को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन के साथ ही एसडीईआरएफ की टीम मौके पर पहुंच गई।

कुइया बहुत ही संकरी होने से रेस्क्यू ऑपरेशन में दिक्कत आई। बचावकर्मी अंदर नहीं जा पा रहे हैं। जिसके बाद जेसीबी की मदद से कुइया के समानांतर गड्?ढा खोदने की कोशिश की। इसमें भी कामयाबी नहीं मिली तो फिर जवानों रस्सी की मदद से नीचे उतरे और बुजुर्ग को बचाया। घटना की जानकारी मिलते ही परिजन के साथ ही बड़ी संख्या में गांव के लोग मौके पर जमा हो गए। परिजन और गांव वाले लगातार कुइया में गिरे बुजुर्ग से बात करते रहे।

मऊगंज के सभी थानों में ई-समन प्रणाली शुरू, अब समन तामील में नहीं होगी देरी

मिनटों में पहुंचेगा कोर्ट का नोटिस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले में पुलिस कार्यप्रणाली को डिजिटल बनाने की पहल की गई है। पुलिस अधीक्षक दिलीप सोनी के निर्देश पर जिले के सभी थानों में ई-समन प्रणाली शुरू हो गई है। इसके लिए थानों के ऑपरेटर, समन वारंट मुंशी और मददगारों की विशेष बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में शनिवार को दोपहर आयोजित हुई। बैठक में ऑनलाइन समन-वारंट और सीसीटीएनएस अपडेट की समीक्षा की गई।

साथ ही पासपोर्ट और चरित्र सत्यापन की प्रविष्टियां भी देखी गईं। नई व्यवस्था में कोर्ट से थानों तक समन और वारंट इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से भेजे जाएंगे। पुलिस डिजिटल माध्यम से ई-समन की तामील करा सकेगी।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विक्रम सिंह ने बताया कि ई-समन प्रणाली डिजिटल पोर्टल आधारित सेवा है। पहले समन और वारंट की तामील में कई दिन लगते थे।

पैरोकार को थाने तक समन पहुंचाने में विलंब होता था। देरी के लिए अक्सर एक-दूसरे पर आरोप लगाए जाते थे। नई व्यवस्था में तामील प्रक्रिया की जानकारी हर स्तर पर ऑनलाइन अपडेट होगी।

इससे न्यायिक प्रक्रिया में तेजी आएगी। अधिकारियों की जवाबदेही बढ़ेगी। समन तामील की प्रक्रिया अब हफ्तों की बजाय कुछ घंटों या दिनों में पूरी होगी। न्यायालय की सुनवाई में अनावश्यक देरी नहीं होगी।

उप मुख्यमंत्री ने पतंजलि जिला प्रमुख विश्वकर्मा के स्वास्थ्य की ली जानकारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल संजय गांधी अस्पताल पहुंचकर पतंजलि जिला प्रमुख रामाधार विश्वकर्मा के स्वास्थ्य की जानकारी ली। उन्होंने चिकित्सकों को विश्वकर्मा के समुचित उपचार के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री ने इसके बाद अस्पताल की व्यवस्थाओं तथा अन्य मरीजों के स्वास्थ्य की भी जानकारी ली। इस अवसर पर डीन मेडिकल कालेज डॉ सुनील अग्रवाल तथा अन्य चिकित्सक उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।